सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रू0 12ê-
वार्षिक	रू0 120ê-
विशेष वार्षिक	रू0 500ê-
विदेश म (वार्षिक)	30 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers- 9838644687

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

सितम्बर , 2009 वर्ष 8 अंक 7

रमज़ान के रोज़े

ऐ ईमान लाने वालो! तुम पर रोज़े रखना फ़र्ज़ किये गये जिस तरह तुम से पहले की उम्मतों पर फर्ज़ किये गये थे ताकि तुम मुत्तक़ी (संयमी) बन जाओ।

(पवित्र कुर्आन 2:183)

रोज़े की नीयत के साथ ईमान वाले के सुब्हे सादिक़ से ग़ुरूब आफ़ताब तक खाने पीने और जिमाअ़ (सहवास) से रुकने और गुनाहों से बचने को रोज़ा रखना कहते हैं।

(इदारा)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कन्या भ्रूण हत्या	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी	3
कुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सैय्यद अबुल हसन अली ह़सनी	9
जग नायक	मौ0 स0 म0 राबे ह़सनी	11
पति पत्नी के पारस्परिक कर्तव्य	अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी	14
रिसालत का बयान	मो0 मुजीबुल्लाह नदवी	16
हम कैसे पढ़ायें	डॉ. सलामत उल्लाह	17
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मो0 ज़फर आलम नदवी	19
इस्लाम आतंक नहीं अनुसरणीय जीवन आदर्श	स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	21
स्वतंत्रा संग्राम में	अब्दुल वकील नदवी	24
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	27
मय्यित के हुकूक़	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी	30
एतिदाल और मियानः रवी	एम0 हसन अंसारी	33
अहले खैर हजरात से अपील		34
धनिकों तक सिमटती शिक्षा	मुशर्रफ अली	35
बिल्लियों की क़िस्में		36
हींग		37
मानवता के हितार्थ सत्य और न्याय का सुकार्य	स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	38
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ	40

कन्या भ्रूण हत्या
रहिमे मादर में बच्ची का क़त्ल

डॉ0 हारून रशीद सिद्दक़ी

इस्लाम आने से पहले अ़रब के लोग बच्ची की पैदाइश पर दुःखी होते थे, और कुछ जाहिल (जड़) तो बच्ची को ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे जिस की इत्तिलाअ़ हम को क़ुर्आन मजीद से भी मिलती है और ह़दीस से भी। तारीख़ के मुतालआ़ (अध्ययन) से तो पता चलता है कि इस्लाम आने के वक़्त सारे आ़लम में औ़रत की ह़ालत अच्छी न थी। यह सच है कि कहीं कोई औ़रत पूजी भी जाती थी लेकिन आ़म औ़रतों का ह़ाल अच्छा न था। औ़रत को उस बुरी ह़ालत से सब से पहले इस्लाम ने उबारा कि हर मुसलमान, बच्ची की परवरीश, तरबीयत में ख़ुशी मह़सूस करने लगा, निकाह़ में लड़की को इख़्तियार दिया गया, जायदाद में उस का हिस्सा लगाया गया। इ़ज़दुवाजी तअ़ल्लुक़ात (दम्पति संबन्ध) की गड़ बड़ी की कई शक्लों में क़ाज़ी द्वारा निकाह़ ख़त्म करने, लड़की को खुलअ़ लेने वग़ैरह के ह़क़ दिये गये। यह भी सच है कि तहज़ीबी तरक़्क़ी में ग़ैर मुस्लिमों में भी औ़रतों को ज़ुल्म से नजात मिली लेकिन इस नई तहज़ीब (सभ्यता) में उस पर मज़ालिम के जो नये दरवाज़े खुले लगता है वह अब क़ियामत से पहले बन्द होने के नहीं उन में सबसे अहम (महत्वपूर्ण) उनकी भ्रूण हत्या है।

बेशक हमने साइंस में ह़ैरत अंगेज़ (आश्चर्यजनक) तरक़्क़ी की लेकिन यह साइंस ही की देन है कि हम रह़िम (गर्भाशय) में जनीन (भ्रूण) की जिंस जान लेते हैं कि गर्भ में बच्ची है या बच्चा फिर यह भी साइंस ही की देन है कि आसानी से ह़म्ल गिरा दिया जाता है।

लोगों को नताइज की परवाह कब है? परवाह तो दौलत की है। अगर लड़कियाँ लड़कों के मुक़ाबले में 50 फ़ीसद हो जाएं तब भी आपत्ति आएगी निर्धनों पर, धनवान तो जहाँ लाखों गिन के अपनी पुत्री के लिये कमासुक लड़का पा लेते हैं (चाहे धन का लालची उसे जला कर दूसरे लाख की खोज करे) 50 प्रतिशत लड़कियों वाले उन ही को अपनी बेटियाँ अर्पित कर देंगे। अतः वह तो कन्या भ्रूण हत्या से हाथ खेचने वाले नहीं। आप अस्पतालों पर प्रतिबन्ध लगाएं वहाँ पहरा बिठाएं पुरन्तु भला हो धन के लोभी घूस खाने वालों का यह कारो बार चलता रहेगा, धनवान लोग रह़िम की जानकारी वाले यंत्र अपने घरों में लगा लें गे। कन्या भ्रूण हत्या और भारी जहेज़ का लेन देन दोनों समान हैं, भ्रूण हत्या में एक ही जान गई जहेज़ प्रथा सैकड़ों को ज़िन्दा दर गोर (जीते जी समाधि में) कर रखा है।

अब तो ग़रीब दीन्दार मुसलमान भी बच्ची की पैदाइश पर दुःख प्रकट करने लगे हैं वह इस लिये दुःखी नहीं हैं कि बच्ची के पालन पोषण पर ख़र्च करना होगा अपितु इस कारण दुःखी है कि इस को कौन पूछे गा? हम इसका प्रसन्नता पूर्वक पालन पोषण करेंगे, इस को ज्ञान विज्ञान देंगे, इसको सत्यनिष्ठ बनाएं गे, इसको पर्दा करने वाली बनाएं गे, इसको नमाज़ राज़े का पाबन्द बनाएं गे, परन्तु जब यह बड़ी होगी तो निर्धनता के कारण कोई दीनदार स्वस्थ प्रश्रमी लड़का इसे पैगाम न देगा, वह तो उसे पैगाम देगा जहाँ से उस को जहेज़ मिलेगा और अगर कोई दीनदार कर भी ले जाएगा तो समाज में प्रचलित जहेज़ को देख कर उसका अपमान करे गा और सताए गा। लड़कियों के विषय में समाज में बड़ी भयानक परिस्थिति हो गई है।

प्रश्न है कि कन्या भ्रूण हत्या को कानून रोक लेगा? उत्तर यह है कि बस किसी सीमा तक, आप उस समय बड़े ही आश्चर्य में होंगे जब क़ानून बनाने वाले, क़ानून चलाने वाले और क़ानून के रखवाले आप को कन्या भ्रूण हत्या करते हुए और लाखों का जहेज़ देते, लेते हुए मिलें गे।

क्या दीन धर्म वाले विशेषकर मुस्लिम जन अपने धर्म द्वारा कन्या भ्रूण हत्या तथा जहेज़ प्रथा पर क़ाबू पा लेगे? उत्तर वही है कि किसी हद तक।

जब बच्ची आए गी तो उस की बिदाई में लाखों का ख़र्च करना है तो उस का आना क्यों पसन्द करें गे? हाँ जिन के पास इतना धन है कि वह ख़र्च करने के बहाने ढून्ढते हैं वह कन्या की भ्रूण हत्या तो ना करें गे परन्तु क्या उन को कोई जहेज़ से भी रोक सकेगा? जब कि कन्या दान उनके धर्म का अंग है।

फिर धर्म कहानी का हवाला देने में डर लगता है कि कोई कह बैठे कि हमारे धर्म पर आक्षेप लगा रहे हैं वरना जहाँ द्रोपदी जी पाँच भाइयों की वफ़ादार बीवी (पति भक्ति) थीं। छोड़िये इस को अभी पिछले जून मास ही के उर्दू राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र के लखनऊ में पढ़े जाने वाले किसी अंक में छपा था कि एक स्त्री के विषय में दो भाइयों में झगड़ा हुआ तो गाँव पंचायत ने पुलिस की मौजूदगी में फैसला सुनाया कि एक ही औरत दोनों भाइयों में बारी बारी से रहे। आप राष्ट्रीय सहारा की यह ख़बर भी पढ़ लें।

जैसलमेर (राजस्थान) के एक गांव 'देवड़ा' के बारे में एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है कि वहां पिछले 100 वर्ष में किसी बच्ची की शादी नहीं हुई है। पैदा होते ही उन्हें मार दिया जाता हैं कभी कभी तो यह काम खुद उसकी मां करती है, वह अपने दूध के साथ बच्ची को अफ़ीम खिला देती है। नाक पर रेत की पोटली रख देती है या मुंह और नाक में रेत भर देती है। मुंह पर रज़ाई या तकिया रख देती है ताकि बच्ची का दम घुट जाए, या मूंह में नमक भर देती है।

(राष्ट्रीय सहारा 9 सितम्बर 2006)

क्या यह गाँव कानून की पकड़ से बाहर है? क्या इस गाँव के लोग नास्तिक हैं? ऐसा नहीं है।

इससे ज्ञात हुआ कि कन्या भ्रूण हत्या पर लड़कियों की कमी का ख़ौफ़ दिलाकर क़ाबू नहीं पाया जा सकता, ना ही किसी फ़िलासफ़ी से इस पर कन्ट्रोल किया जा सकता है। जहाँ हम जिन्सी की कानूनी आज्ञा हो, जहाँ पुलिस के सामने औरत में साझेदारी का फ़ैसला हो, जहाँ आबादी कम करने के लिये भ्रूण हत्या की इजाज़त हो वहाँ का क़ानून, वहाँ का माड्रन अख़लाक़ न कन्या भ्रूण हत्या को समाप्त कर पाएगा, न जहेज़ प्रथा दूर कर पाएगा। यह दोनों विकार, यदि दूर हो सकते हैं तो सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा के ख़ौफ़ (ईश्वर भय) से दूर हो सकते हैं।

रहे मुसलमान तो इनके यहाँ भ्रूण हत्या क्या, कोई हत्या ईशादेश बिना महा पाप है। परन्तु क्या सारे मुसलमान इस्लाम धर्म के पाबन्द (आबद्ध) हैं? कदापि नहीं। आप सरवे कर के देख लें, अधिकाँश मुसलमान केवल इस लिये मुसलमान हैं कि वह लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लहि पढ़ते और अपने को मुसलमान कहते हैं, वरना नमाज़ छोड़ने वालों, रमज़ान के रोज़े न रखने वालों की गिन्ती नमाज़, रोज़ा वालों से कहीं अधिक है इसी प्रकार माल पर ज़कात न देने वालों, सामर्थ्य होते हुए हज्ज न करने वालों की संख्या भी बहुत ज़ियादा है। यह बात तो इस्लाम के स्तंभों की है, दूसरे इस्लामी कार्यों में कोताही तो कहने योग्य नहीं। दाढ़ी रखने वालों का प्रतिशत क्या है? औरतों में पर्दे की क्या दशा है? गन्दे गानों तथा बाजा से मुसलमान किस हद तक बचते हैं? झूठ बोलने, झूठी गवाही देने से कहाँ तक दूर रहते हैं? इन सब पर निगाह डालें तो मुसलमानों की दीनी हालत पर खून के आँसू बहाएं। ऐसे में अगर कुछ धनवान मुसलमान भ्रूण हत्या कर बैठे तो कोई आश्चर्य नहीं। इसी प्रकार धनवान मुसलमान यदि अप्रिय जहेज़ दे डालें तो असम्भव नहीं।

शेष पृष्ठ 10

कुरआन की शिक्षा

मौलाना मु0 मंजूर नोमानी

हक़ और नेकी को फैलाने और आम करने की कोशिश और इस राह में जाँबाज़ी

अकाइद, आमाल, अख्लाक़ और मुआमलात जैसे ज़िन्दगी के अलग–अलग शोबों में कुर्आन–मजीद ने जो हिदायतें दी हैं। (जो किसी कद्र तफ़्सील से पिछले अंकों में जिक्र की जा चुकी है) कोई अक्ले–सलीम वाला इस में शक नहीं कर सकता कि यह सब हक़ और नेकी की हिदायतें हैं। कुर्आन–मजीद इन हिदायात पर अमल करने के मुतालबे के साथ अपने मानने वालों से इस का भी मुतालबा करता है कि वे इस हक़ और नेकी को दूसरों में फैलाने और आम करने की भी जद्दो–जह्द (कोशिश) करें। यानी इसकी पूरी कोशिश करें कि अल्लाह के ज़ियादा से जियादा बन्दे हक़ और नेकी के इस रास्ते को इख्तियार कर के अल्लाह तआला की रिजा और रह्मत और आखिरत में जन्नत के हकदार बनें।

हालात के मुताबिक इस कोशिश की शकलें और इसके दर्जे मुख्तलिफ होते हैं। 'दावत–इलल्–ख़ैर' (नेकी की तरफ दावत देना), 'अम्र बिल् मारूफ़' (इच्छाइयों का हुक्म करना), 'नही अनिल मुन्कर' (बुराईयों से रोकना), जिहाद फी सबीलिल्लाह, (अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना); इन मुख्तलिफ शक्लों के उन्वानात (शीर्षक) हैं। यह नाचीज़ इस विषय पर तफ़्सीली कलाम (विस्तृत चर्चा) अपनी किताब "दीन–व–शरीअत" में कर चुका है। यहाँ सिर्फ यही बताने की इच्छा है कि कुर्आन–मजीद का मुतालबा (माँग) और इस की दावत व हिदायत इस बारे में क्या है। इस लिये यहाँ इस सिलसिले की सिर्फ चन्द आयात दर्ज की जाती हैं।

सूरए आलि इम्रान में इर्शाद है :–

तर्जमा : और जरूरी है कि तुम में एक ऐसी उम्मत हो जो लोगों को भलाई की तरफ दावत दे, नेकी के लिये लोगों से कहे और बुराई से रोके, और यह काम करने वाले ही फलाह–याब (कामयाब) होंगे।

(आले इम्रान : 104)

इस आयत के शब्द "मिनकुम्" से लोगों को यह शुबह हो जाता है कि इस काम का मुतालबा इस आयत में कुर्आन की मानने वाली पूरी उम्मत से नहीं किया गया है बल्कि यह इस के किसी ख़ास तबक़े (वर्ग) की जिम्मेदारी है। लेकिन अगर गौर किया जाये तो इस आयत ही के आखिरी वाक्य :–

"व ऊलॉइक हुमुल् मुफ़्लिहून" से इस गलत–फहमी की तर्दीद (खंडन) हो जाती है। क्योंकि इस से मालूम होता है कि फ़लाह व सआदत (खुश नसीबी) के हक़दार सिर्फ वही लोग होंगे जो इस काम को अन्जाम दें। और जिस अमल पर फ़लाह व सआदत का हुसूल (प्राप्ति) मौकूफ़ (अवलंबित) हो, जाहिर है कि उस का मुतालबा सिर्फ़ ख़ास वर्ग से नहीं किया जा सकता, बल्कि उस की दावत पूरी उम्मत को दी जानी जरूरी है। इसके अलावा, इस आयत के 4–5 ही आयतों के बाद कुर्आन ने इस मुताबले को फिर इन शब्दों में दोहराया है :–

तर्जमा : (ऐ मुहम्मद (सल्ल0) के मान्ने वालो) तुम तमाम उम्मतों में बेहतरीन उम्मत हो, जो लोगों (की इस्लाह, सुधारणा और हिदायत) के लिये ज़हूर (प्रत्यक्ष) में लाई गयी है। तुम्हारा काम यह है कि तुम नेकी का हुक्म देते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। (आलि इम्रान : 110)

इस आयत में इस उम्मत के वुजूद (अस्तित्व) व जुहूर (प्रकटन) की ग़रज़ व ग़ायत (ध्येय) ही यह बताई गयी है कि इस को ईमान बिल्लाह के साथ अम्रबिल् मारूफ़, नही अनिल् मुन्कर और लोगों की इस्लाह व हिदायत की खिदमत

अन्जाम देना है।

अल्गरज़ इस आयत से भी यह बात बिल्कुल साफ़ (स्पष्ट) हो जाती है कि उम्मत का कोई खास तबका (वर्ग) इस काम का जिम्मेदार नहीं है, बल्कि पूरी उम्मत से इस का मुतालबा है। हाँ इस काम की खास शक्ल ऐसी है कि साधारण परिस्थितियों में उम्मत के हर फर्द (व्यक्ति) का इस में लगना अनिवार्य नहीं होता। बल्कि इस की अहलियत व सलाहियत रखने वाले लोग अगर जरूरत के अनुकूल इस काम में लगे रहें और दूसरों का तआवुन (सहायता) उन्हें हासिल रहे तो भी काम पूरा होता रहता है। और इस लेखक का खयाल है कि सम्भवतः इसी तरफ इशारा करने के लिये पहली आयत में शब्द 'मिनकुम्' लाया गया है, वल्लाहु अअ्लम्।

और सूरए हॉमीम–सज्दह् में फर्माया गया :–

तर्जमा : और कौन जियादा अच्छा हो सकता है उस शख्स से बात में जिस ने बुलाया अल्लाह की तरफ और खुद भी अच्छे अमल किये और कहा कि मैं अल्लाह के फर्माबरदारों में से हूँ। (41:33)

यानी सब से अच्छी बात उस बन्दे की है जो ईमान व अमले–सालेह का जाती (व्यक्तिगत) सर्माया (सम्पत्ति) रखने के साथ अल्लाह के दूसरे बन्दों को भी उस की तरफ बुलाता हो। और उनकी इस्लाह की कोशिश करता और इस में जान खपाता हो।

और सूरए–अल् अस्र में फर्माया गया :–

तर्जमा : जमाने की गर्दिश की कसम! सारे इंसान खसारे (घाटे) में हैं। खसारे से बचने वाले और फलाह पाने वाले सिर्फ वे बन्दगाने–खुदा हैं जो ईमान लायें, नेक आमाल करें, और राहे–हक़ पर चलने की और नफ्स (अस्तित्व) को बुरी खाहिशों से थामे रखने की, एक दूसरे को वसीयत व नसीहत भी करें। (अल अस्र)

इस 'सूरः' में खसारे से बचने और फलाह पाने के लिये ईमान और अमले–सालिह के साथ "तवासी बिल् हक् का मतलब जाहिर है कि अकाइद में, ईमान में, अखलाक में मुआमलात में (चाहे वे मुआमलात व्यक्तिगत हों या सामूहिक, या राष्ट्रीय हों या अंतर राष्ट्रीय अपनों के साथ हों या दूसरों के साथ) गरज जिन्दगी के हर मुआमले और हर शोबे (विभाग) में हक पर चलने के लिये लोगों को दावत दी जाये। इसी तरह "तवासी बिस्सब्र" का मतलब यह है कि गलत राहों पर चलने और गलत काम करने की जो खाहिशें विभिन्न प्रेरकों की वजह से दिल में पैदा होती हैं, उन से रूके रहने और नफ्स को काबू में रख कर हक व हिदायत का पाबंद रखने की भी दूसरों को दावत दी जाये और वसीयत व नसहीत की जाये। बहरहाल इस "सूरत" में बताया गया है कि ईमान और अमले–सालेह की तरह् यह काम भी हमारे उन बुन्यादी फराइज में से है जिन को अदा किये बगैर हम फलाह व सआ़दत पा नहीं सकते।

इस काम का एक जामे (सम्पूर्ण) और वसीअ़ उन्वान (शीर्षक) जैसा कि अर्ज़ किया गया "जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह" भी है। जिस का अस्ल मतलब है अल्लाह के रास्ते में पूरी मेहनत और कोशिश करना। यानी अल्लाह के बन्दों को अल्लाह के रास्ते पर लगाने और उस की रिजा व रहमत का हकदार बनाने के लिये जिस वक्त जिस मेहनत व कोशिश और जिस कुरबानी की जरूरत हो और जो अपने इमकान (वश) में हो वह कर गुजरना। जिहाद के असल मानी यही हैं। हाँ इस की शक्लें जैसा कि अर्ज किय जा चुका हालात के लिहाज़ से मुख्तलिफ़ होती हैं। जैसे रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्क–ए–मुअ़ज़्ज़मा के बारह तेरह सालों में जिसतरह यह काम करते रहे वह जिहाद की एक शक्ल थी। फिर मदीन–ए–तय्यिबा के शुरू के दौर में आप (सल्ल0) ने और आप की रहनुमायी में आप के सहाब–ए–किराम ने जो दावती व तबलीग़ी कोशिशें फर्मायीं और जो मेहनतें और मशक्कतें (कष्ट)

शेष पृष्ठ 8

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तसनीम

रसूलुल्लाह (सल्ल0) की सिफत

हज़रत अनस रजि0 से रिवायत है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अखलाक सबसे बेहतर है। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अनस (र0) से रिवायत है कि मैंने दीबा और रेशम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक हथेली से जियादः नर्म नहीं छुवा और कभी कोई खुशबू रसूलुल्लाह (सल्ल0) की खूशबू से जियादः अच्छी नहीं सूंघी। और मैंने आपकी दस बरस खिदमत की; आपने कभी उफ नहीं फरमाया और न किसी काम के करने या न करने पर आपने कभी फरमाया, कि यह क्यों न किया या क्यों किया। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत सअ़ब (र0) बिन जस्सामः से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में एक गोरखर हदयः पेश कियां। आपने उसको वापस फरमा दिया। जब मेरे चेहरे की हालत देखी तो फरमाया, मैं इसको न वापस करता मगर मैं एहराम बांधे हूँ। (बुखारी–मुस्लिम)

खुशखुल्की का दर्जा

हज़रत नवास (र0) बिन समआन से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नेकी और गुनाह के मुतअ़ल्लिक सवाल किया। आपने फरमाया, नेकी अच्छे अख्लाक हैं और गुनाह वह है जो सीने में खटक पैदा करे और आदमी उसको नापसन्द करे कि लोग उसके गुनाह पर मुत्तला हों। (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह (र0) बिन अ़म्र बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहवन या इरादतन कभी फुहश बात न निकालते थे और फरमाते थे कि तुममें सबसे बेहतर वह है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हैं। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू दरदा (र0) से रिवायत है कि नबी (सल्ल0) ने फरमाया, मोमिन बन्दे की मीजान में अच्छे अख्लाक से जियादः कोई चीज वजनी न होगी। और अल्लाह तआला फुहश बकनेवाले बदजबान आदमी से नफरत करता है। (तिर्मिजी)

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया गया कि किस सबब से लोग जन्नत में दाखिल होंगे। आपने फरमाया, अल्लाह के खौफ व इहतियात और खुशखुल्की से। अर्ज किया गया दोजख में जियादःतर किस वजह से लोग जायेंगे। फरमाया हरामखोरी और बदकारी से।

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायज है कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, कि कामिलतर ईमान उसका है जिसके अख़्लाक अच्छे हों और तुममें अच्छा वह है जो अपनी बीवियों से हुस्ने सुलूक से पेश आये। (तिर्मिजी)

हज़रत आयशः (र0) से रिवायत है कि मैंने नबी (सल्ल0) से सुना है मोमिन अच्छे अखलाक के जरीये पैदर पै रोजे रखने वाले आबिद का दर्जा पा लेता है। (अबूदावूद)

हज़रत अबू उमामः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मैं उस शख्स के लिये जन्नत के सामने एक घर का जामिन होता हूँ जिसने हक पर होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया और उस शख्स के लिये जन्नत के अन्दर मैं एक घर का जामिन हूँ जिसने झूठ छोड़ दिया, अगरचि वह मजाकन बोलता था। और उस शख्स के लिए जन्नत की बलन्दी में एक घर का जामिन हूँ जिसके अख्लाक अच्छे हों। (अबूदावूद)

हज़रत जाबिर (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, कियामत के दिन मुझे सबसे जियादः पसन्दीदः और मुझसे सबसे जियादः करीब वह होंगे जो अच्छे अख्लाक वाले हैं। और मुझे सबसे जियादः नापसन्द और सबसे जियादः मुझसे दूर होंगे, वह (जो) जियादः बातूनी, चरब जबान और तसन्नुअ से बात करने

वाले मुतकब्बिर होंगे। (तिर्मिजी)

खुदा की दो पसन्दीदः खस्लतें

हज़रत इब्नि अब्बास (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अशज्ज कैस से फरमाया, तुममें दो खस्लतें हैं जिनको अल्लाह तआला पसन्द फरमाता है। बुर्दबारी और सुकून व सन्जीदगी। (मुस्लिम)

हज़रत आयशः (र0) से रिवायत है कि नबी (सल्ल0) ने फरमाया, अल्लाह तआला नर्म है। और नर्मी को पसन्द फरमाता है। और जो नर्मी पर अता फरमाता है सख्ती पर और इसके अलावा किसी चीज़ पर नहीं अता फरमाता । (मुस्लिम)

तुम सख्ती के लिये नहीं भेजे गये हो

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया, लोग बिगड़ने लगे। आँ हज़रत (सल्ल0) ने फरमाया, इसको छोड़ दो और इसके पेशाब पर एक बड़ा डोल पानी का बहा दो। और तुम सख्ती के लिये नहीं भेजे गये हो। इसलिये भेजे गये हो कि आसानी पैदा करो।

(बुखारी–मुस्लिम)

दुरुश्त खू

हज़रत जरीर (र0) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, जो नर्मी से महरूम रहा वह हर भलाई से महरूम रहा।

(मुस्लिम)

गुस्सा न करने की वसिय्यत

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी (सल्ल0) से अर्ज किया मुझे वसिय्यत कीजिये। आपने फरमाया, गुस्सा न करो। उसने कई बार यही कहा, मुझे वसिय्यत कीजिये और आप बार–बार यही फरमाते रहे कि गुस्सा न करो। (बुखारी)

❑❑

अहंवाद सबसे बड़ी त्रासदी

प्रस्तुत : एम0 हसन अंसारी

"इस्लाम के इतिहास की सबसे बड़ी ट्रेज्डी अहंवाद (नफसानियत) का वह खेल है जो हमेशा अपना तमाशा दिखाता रहा। हमने कभी अपने दुश्मनों से मात नहीं खाई। विश्व इतिहास और इस्लाम के इतिहास पर नजर रखने वाले की यह बात सुन लीजिये और इस को दिलों और दिमागों में अमानत रख लीजिये कि हमने कभी अपने दुश्मनों से मात नहीं खाई है, हमने अपने आन्तरिक विवादों व विरोध से मात खाई है। इसी नफसानियत की बदौलत हमने सल्तनतें खोई हैं, हमारे मुल्कों के चिराग़ गुल हुए हैं और इस्लाम पूरे पूरे मुल्कों से खारिज कर दिया गया है।"

(अली मियाँ)

❑❑

कुर्आन की शिक्षा

इस सिलसिले में उठाई वह भी जिहाद की एक शक्ल थी। और उसके बाद बदर व 'उहुद' और दूसरे गजवात (युद्ध) में जंग व किताल (संहार) के जो मारके हुये वे भी जिहाद ही की एक शक्ल थी।

पस कुर्आन–मजीद में जहाँ–जहाँ अहले–ईमान से जिहाद फी सबीलिल्लाह का मुतालबा किया है इस का मतलब यही है कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह वाला बनाने के लिये और शैतान व नफ्स और माबूदाने–बातिल की गुलामी से नजात (मुक्ति) दिला कर उनको अल्लाह की बन्दगी में लाने के लिये और उनकी जिन्दगी को पाकीजा और नूरानी बना कर उनको खुदा की रहमत और जन्नत का मुस्तहिक (पात्र) बनाने के लिये जो कोशिश और कुरबानी तुम कर सकते हो उस में कभी न करो। कुर्आने–मजीद में इस काम को इतनी अज्मत दी गयी है कि इस को खुद अल्लाह की नुस्रत (मदद) और इसके करने वालों को 'अंसारूल्लाह' यानी "अल्लाह के मददगार" कहा गया है उन के लिये दुन्या और आखिरत की बड़ी से बड़ी सर्फ़राजियों और सरबलन्दियों के वादे किये गये हैं।

❑❑

किस्त : 17

कारवाने ज़िन्दगी

आत्म कथा

अध्याय चार

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी

दारूल उलूम के हदीस की क्लास में

लाहौर से वापसी पर मैं नदवा में शैख़ुल हदीस (हदीस के आचार्य) मौलाना हैदर हसन खाँ साहब टोंकी रह0 की क्लास का बाकायदा तालिब इल्म बन गया। यह मुबारक सिलसिला जूर्ला 1929 से शुरू हो गया। मैंने मौलाना से दारूल उलूम में बुख़ारी व मुस्लिम और अबूदाऊद, तिर्मिज़ी एक एक शब्द पढ़ी। कुछ हिस्सा बैजावी का भी अलग से पढ़ा, और कुछ सबक लाजिक के भी मौलाना ने अपने शौक से पढ़ाये। दो साल मैंने मौलाना के साथ ही उनके कमरे में, जो दारूल हदीस भी था, दिन रात रहा। टोंक के पुराने ख़ानदानी तअल्लुक़ात, फिर वालिद साहब से विशेष तअल्लुक, मुझ पर पिदराना शफकत (माँ–बाप जैसी मुहबबत) रखते थे, खाने पीने में भी साथ था, हिसाब किताब भी मेरे पास रहता था। आने जाने में भी साथ रहता था। हदीस की टीचिंग बड़ी सजीव और दिल में उतर जाने वाली होती थी। हाजी इमदादउल्लाह मुहाजिर मक्की रह0 के खलीफा थे। नमाज में बड़ी तल्लीनता होती, और रात के तीसरे पहर इबादत में डूबे रहते। सादा जीवन, उच्च विचार, समानता का बोल बाला। मेरी हदीस की तालीम उन्हीं की देन है। मौलाना आमतौर पर विद्वानों को हदीस की सनद प्रदान करने, सनद सुलेख में अपने किसी खुशख़त शागिर्द से लिखवाते और दस्तख़त फरमा देते। मैंने भी यह सेवा की, लेकिन मुझे सनद देना हुआ तो मुझे सनद अपने कलम से लिखकर (जिस में शायद पूरा दिन लग गया, इनायत फरमाई।) इतना चाहते थे।

यद्यपि नदवा से मेरा तअल्लुक ख़ानदानी और मौरूसी था और मेरी सोच और संस्कृति इसी के सांचे की ढली हुई है। लेकिन मेरा ज्ञानार्जन 1928–29 में उस समय शुरू हुआ जब मेरी फ़िक्: की तालीम नदवा के एक पुराने लोक प्रिय उस्ताद मौलाना शिबली साहब जै राजपुरी आज्मी के यहाँ शुरू हुई, फिर इस में ठहराव उस समय पैदा हुआ जब मैं मौलाना हैदर हसन खाँ साहब की कलास में बाकायदा दालिख हुआ। मेरे अक्सर सहपाठी और मौलाना के दर्स (शिक्षण) के साथी, नदवी दोस्त उसी जमाने के हैं। मौलाना मसऊद नदवी और मौलाना अब्दुल कुद्दूस हाशिमी तो मुझ से सीनियर थे, मसऊद साहब से अरबी मैगज़ीन और अरबी ज़ौक़ के नाते परिचय हुआ। और दिन प्रति दिन बढ़ता चला गया, यहाँ तक कि हम दोनों घनिष्ठ मित्र और प्रिय भाई मालूम होने लगे। मौलाना अब्दुस्सलाम साहब किदवई नदवी, मौलाना मो0 नाज़िम साहब नदवी, मौलाना मुहिब्बुलाह साहब नदवी, एम0 ए0 अलीग, मौलाना मुस्तफ़ा करीम एम0एस0सी0 मोल्वी हबीब अहमद नदवी, हाफ़िज़ अब्दुश्शकूर साहब सीवानी, मोल्वी बिज़ाअ़त हुसैन, मोल्वी अबू यूसुफ साहब, मोल्वी मतलूबर्रहमान नगरामी, मौलाना सैयद मोहम्मद अब्दुल गफ्फ़ार साहब नदवी नगरामी, मौलाना मुहम्मद उवैस साहब नगरामी, मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद इमरान खाँ साहब नदवी, मोल्वी सैयद रईस अहमद साहब जाफ़री नदवी, सैयद अबूबक्र हसनी आदि, सब उसी दौर के साथी और सहपाठी हैं।

ख़ानदानी ज़ख़ीर–ए–कुतुब से वाकेफ़ियत

हमारे घर में कई पुश्तों से एक कीमती ज़ख़ीर–ए–कुतुब चला आ रहा था जिन में कुछ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ, अप्रकाशित (क़लमी) किताबें और महान आत्माओं के पत्र, सनदात व फ़तावः का इतना बड़ा ज़ख़ीरः था जो किसी के व्यक्तिगत कलेकशन में मुशकिल से होगा। और बाढ़ के समय जब

घरों में पानी दाखिल हो जाता और घर खाली करने पड़ जाते, इस की हिफाजत करते रहे। भाई साहब मरहूम की बड़ी इच्छा थी और ताकीद कि मैं इस की देख–भाल करता रहूँ। शायद उनका मकसद यह था कि इस तरह मुझे अपने खानदानी तबरूकात और इल्मी मतबूआत से वाकेफियत हासिल होगी, और मैं इन की कद्र व हिफाजत कर सकूंगा। मैं अपनी नवउम्री और रूचि की बिना पर पुरानी कलमी किताबों को पढ़ने से घबराता था। भाई साहब मरहूम ने जब मेरी असावधानी देखी तो माँ को लिखा कि वह मुझे इस की ताकीद करें। वालिदः साहिबः 1929 या 1930 में मुझे लिखती हैं–

"अली! एक नसीहत और करती हूँ, बशर्ते कि तुम अमल करो। अपने बुजुर्गों की किताबें काम में लाओ। और एहतियात लाजिम रखो। जो किताब न हो वह अब्दू (भाई साहब का उपनाम) की राय से खरीदो। बाकी वह किताबें काफी हैं। इस में तुम्हारी सआदत मन्दी जाहिर होगी। और किताबें बर्बाद न होंगी। और बुजुर्गों को खुशी होगी।"

मसल मशहूर है कि "कोयलों की दलाली में हाथ काले"। इन किताबों के उठाने रखने और पढ़ने से मेरा सामान्य ज्ञान भी बढ़ा और खानदानी बुजुर्गों की अभिरूचि का ज्ञान हुआ। किताबों में तारीखे हिन्द व नजमों और जीवनी का बड़ा भण्डार था, इसलिये कि वालिद साहब को "नुजहतुल खवातिर" लिखने के सिलसिले में इन की जरूरत पड़ती रहती थी, और जिन लोगों को उनकी इस व्यस्तता की जानकारी थी वह ऐसी किताबें उनको भेजते रहते थे जिन से उन के बुजुर्गों का हाल सुरक्षित और किताब में शामिल हो जाये। इन किताबों पर सरसरी नजर डालने से भी मुझे बहुत नफा हुआ। और हिन्दुस्तान के इस्लामी व दीनी इतिहास से लगाव पैदा हे गया, जो बाद में बहुत काम आया।

जिन्दगी का एक मोड़

सन् 1930 था। और रमजान का जमाना, मैं छुट्टियों में रायबरेली आया हुआ था। और पूरी तनमयता से हदीस के अध्ययन में लगा रहना चाहता था कि मेरे बड़े भांजे सैयद महमूद साहब (मुहम्मद राबे के बड़े भाई) जिन की उम्र नौ साल की थी, बीमार पड़ गये। किंग जार्ज कालेज में उनका आपरेशन हुआ, मुझे मरीज के पास ही रहना होता था। अस्पताल का ठहराव मेरे लिये एक तरह का संघर्ष था। इसी हालत में ईद आई। इन हालात का मुझ पर गहरा असर पड़ा। महमूद हसन को स्वास्थ लाभ हुआ। माँ की आँख के मोतियबिन्द के आपरेशन के सिललिये में अभी दो बार अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में कई कई हफ्तो रहेने की नौबत आई। और माँ की सेवा का अवसर मिला। इस हालात ने मुझे दुआ माँगना सिखाया।

जारी.....

❑❑

कन्या भ्रूण हत्या....पृ० ५ का शेष

तो ऐसे मुसलमानों से क्या उम्मीद की जाए कि वह समाज के इन घृणित विकारों, कन्या भ्रूण हत्या तथा अप्रिय जहेज़ दूर करने में कोई रोल अदा कर सकें गे।

मैं ने तो कुछ मुस्लिम विद्वानों को कहते सुना कि अगर आप के पास धन है और जहेज़ दिये बिना अच्छा दामाद नहीं मिल रहा है तो अपनी बेटी के भाविष्य के लिये जहेज़ दे डालिये, साथ ही ऐसा करते कुछ मुस्लिम विद्वानों को देखा भी है। इसी प्रकार दीनदार मुसलमानों को ग़रीब दीनदार लड़की को छोड़ कर अमीर घर की लड़की को पैग़ाम देते और निकाह् करते देखा है। वर्तमान विकरित समाज में मुस्लिम संयमीयों के लिये बड़ी परीक्षा की परिस्थिति है परन्तु संयमी जनों को घबराने की आवश्यकता नहीं और सत्य यह है कि संयमी घबराता भी नहीं। लोग बिगाड़ अपनाएं गे तो अपना ही बुरा करें गे। इस लोक में (दुन्या में) समाज के लिये कठिनाइयाँ पैदा करें गे और आख़िरत में ख़ुदा का अ़ज़ाब भोगें गे।

संयमी जनों को कुछ समझाना नहीं वह अपने काम में लगे हैं बस उन्हें याद दिलाना है और उन से अनुरोध करना है कि वह अपने देश ही से नहीं संसार से कन्या भ्रूण हत्या तथा दूसरे सभी विकारों के दूर करने में दुआ भी करें तथा चेष्ठा भी एवं इस कार्य में लगे लोगों की रहनुमाई (पथ प्रदर्शन) भी।

❑❑

किस्त : 8

जगानायक

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

अनुवाद मु0 गुफरान नदवी

उस बंजर इलाके में अल्लाह तआला के खुसूसी फ़ज़्ल से माँ और उनका दूध पीता बच्चा दोनों ज़िन्दा रहे, फिर जब हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम कुछ बड़े हुवे और स्वस्थ हुवे, वह माँ बाप के बड़े आज्ञाकारी थे।

हज़रत इब्राहीम को हुक्म हुआ कि हज़रत इसमाईल को अल्लाह की राह में कुरबान कर दें इस कुरबानी पर भी अमल हज़रत इब्राहीम ने अपनी तरफ से कर दिया अपनी आँख पर पट्टी बांध कर छुरी चला दी, लेकिन अल्लाह को सिर्फ इम्तिहान लेना था, इसलिये हज़रत इब्राहीम की छुरी उनको नहीं लगी, बल्कि एक मेढे को अल्लाह तआला ने भेज दिया और इब्राहीम की छुरी उसकी गरदन पर लगी और वह ज़बह हुआ और अल्लाह तआला ने उसको हज़रत इसमाईल को ही कुरबानी मानलिया और हज़रत इब्राहीम को अपना सबसे बरगजीदह और मुख़लिस तरीन (सर्व श्रेष्ठ एवं सत्यप्रिय) बन्दे के रूप में स्वीकार कर लिया और उनको अपना मित्र करार दिया[1] और फिर उनको और उनके बेटे इसमाईल को हज़रत आदम की शुरू की हुई मस्जिद की जगह में कअबे के निर्माण का आदेश दिया और इस तरह वह दुनिया में अल्लाह के पहले घर के तौर पर स्थापित हुवा और अल्लाह तआला की इबादत व इताअत (आज्ञापालन) का सर्व प्रथम और वास्तविक केन्द्र बना और उसको कियामत तक के लिये अल्लाह तआला की ओर से तौहीद (एकश्वर वाद) का घर और सत्य धर्म का केन्द्र करार दे दिया गया हज़रत इसमाईल की औलाद बढ़ती और फैलती रही और उनमें से मक्का मुकर्रमा में आबाद रहने वाले, अल्लाह के उस घर की हिफाजत को अपना फरीजह (कर्तव्य) समझते रहे।

हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद में कई नसलों के बअद अदनान नामी व्यक्ति हुवे उनकी औलाद "मअद" "नज़ार" फिर आगे चलकर "मुज़र" और (रबीअः) हुवे, रबीअः पूर्वी क्षेत्र नज्द में जाकर बस गए और "मुज़र" मक्का ही में रहे, उनमें आगे चलकर कुरैश हुवे, और अल्लाह के घर की तवल्लियत (प्रबन्ध) उनके पास आई, अल्लाह का घर, मुकद्दस (पवित्र) घर समझा जाता रहा और सारे अरब के आस पास के इलाके से उसका हज करने आते और कुरैश उनके ठहरने का इन्तिजाम करते, अल्लाह की तरफ से उस घर की और उसके तअल्लुक (संबंध) से पूरे शहर की हिफाजत (सुरक्षा) होती रही।[1]

कक्का मुकर्रमह (पवित्र मक्का)

मक्का मुकर्रमह, हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम के वहाँ ठहराए जाने से पहले बिल्कुल एक निर्जन स्थान और बंजर ज़मीन का भाग था। मक्का दो सूखे पहाड़ो के बीच की घाटी थी, घाटी के आस पास जब बारिश होती तो घाटी पानी की गुजरगाह बन जाती थी। बंजर और खुश्क (शुष्क) होने के बावजूद उस जगह पर अल्लाह का खास (विशेष) फज्ल व करम (दया व कृपा) था। इन्सान के प्रारभिक काल से अल्लाह तआला की ओर से उस जमीन का इन्तिखाब (चयन) हो चुका था। और वहाँ प्रथम इन्सान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने खुदा की इबादत की जगह बना दी थी, कुछ मअलूमाती ज़राए से यह बात सामने आती है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की जमीन पर आमद (आगमन) के समय उन का और उनकी पत्नी हज़रत हव्वा

(1) कामिल फ़ित तारीख : 1/112

(1) अल–रौजुल अनफः 1/7–8, अल–बिदायह वन–निहायह 2/198–210

अलैहिस्सलाम का निवास मक्का के करीब हुआ। यदि पूरी इन्सानी आबादी के भूमण्डल को देखा जाए तो मक्का जमीन के बिल्कुल मध्य में है जिस प्रकार इन्सान के शरीर में नाफ (नाभ) को जो स्थान प्राप्त है उसी प्रकार इन्सानी आबादी के भूमण्डल के मध्य में मक्का को वह स्थान प्राप्त है। इस तरह यह मक्का इन्सानी आबादी का केन्द्र है और असको अल्लाह तआला ने अपनी इबादत गुजारी का केन्द्र बना दिया। चारो ओर से नमाज पढ़ने वाले इसी ओर नमाज पढ़ते हैं और उसके मरकज़ (केन्द्र) अल्लाह का वह घर है जो उसकी जमीन पर उसकी इबादत का पहला मुकाम (स्थान) है। और वहाँ पहुंच कर उसके इर्द ग्रिद इबादत के तौर पर तवाफ (परिक्रमा) किया जाता है।[1]

अतः अल्लाह तआला के अन्तिम नबी को भी जिसकी शरीअत (धर्मशास्त्र) और आदेशों को दुनिया के अन्तकाल तक प्रचलित रहना है वहीं पैदा किया गया, और ऐसे कुटुंब में पैदा किया गया जो पूरे अरब क्षेत्रों के निवासियों की दृष्टि में सर्वश्रेष्ट कुटुंब और कुटुंब के अन्दर भी सर्वश्रेष्ट शाखा में आप को पैदा किया गया। मक्का की जन संख्या जो अन्त में केवल कुरैश के कबीले पर सम्मलित थी आप के सबसे बड़े दादा (पितामह) कुसैबिन किलाब की अध्यक्षता एक शक्तिशाली लोकतंत्र व्यवस्था पर अधारित मानी जाती थी, और वहाँ के धारमिक और संसारिक दोनों प्रकार के कामो को निपटाने के लिये एक अच्छा प्रबन्ध नियुक्त था, जिसकी व्यवस्था की जिम्मेदारी परिवार की विभिन्न शाखाओं पर विभाजित कर दी गई थी, इस प्रकार लोकतंत्र प्रबंध स्थापित हो गया था जो अपने जमाने के प्रचलित प्रबंधो के बीच अकेला था जबकि उस समय दुनिया के शिक्षित और सभ्य राष्ट्रों में साम्राज्यवाद और डिक्टेर शिप का चलन था ऐसे ही जमाने में उन्होंने एक लोकतंत्र व्यवस्था स्थापित की जो एक छोटे से क्षेत्र में थी और बहुत महत्वपूर्ण थी, इस लोक तंत्र व्यवस्था को उनकी औलाद में बाकी रखा गया और कुसई का घर इसका केन्द्र बना जिसकी हैसियत लोक तंत्र पारलीमेन्ट की सी थी, इस प्रबंध के विभिन्न कामों में अल्लाह के उस घर की जियारत (दर्शन) करने वालों, और आने वालों की राहत और मेहमानी की भी जिम्मेदारी भी थी। जो हुजूर सल्लाहु अलैहि व सल्लम के पूर्वजों को मिली थी। इस जिम्मेदारी को उन बुर्जुगों ने भली भांति निभाया जिसकी वजह से पूरे अरब द्वीप में उनकी महानता और बड़ाई लोगों के दिलों में बैठ गई।[1] हुजूर सल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब को इस सिलसिले में बड़ी विशेषता प्राप्त थी और उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को बहुत अच्छे ढंग से पूरा किया।[2]

(1) मक्का की तफसील के लिये देखये : तारीख मक्का, अजरकी 1/38, अल–मुफस्सल फी तारीखिल अरब कबलल इस्लाम।
(2) अनसाबुल अशराफ–बलाजरी।

ज़मज़म कुवें की तलाश

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने जहाँ और चीजों की फिक्र की वहाँ इस बात की भी फिक्र की, जिसका इशारह उनको खुवाब द्वारा मिला था, कि वह उस मुबारक चशमा (स्रोत) ज़मज़म को जो कुछ समय पश्चात वर्जित होकर ऊपर से बन्द हो गया था दुबारा ज़मीन के अन्दर से बाहर लाएं[1] वह जब इसमें कामयाब हुवे तो इस मुबारक काम का सेहरा उनके सर बन्धने को देखकर खानदान की दूसरी शाखों ने उसको सब का मुश्तरका (साझे का) करार देकर अपना हक जमाया, उनके झगड़ा करने पर वह सब लोग और आप उसके लिये शाम (सीरिया) के इलाके की तरफ किसी काहिन (ज्योतिषी) के पास जाकर फैसला कराने के लिये तय्यार हुवे, लेकिन सफर के दौरान अब्दुल मुत्तलिब की विशेष हैसियत सबके सामने खुल कर आई, जिनको अपनी

(1) अलकामिल फिततारीख : 2/12–35, (2) अल–रौजुल अनफ : 1/98

उम्र (आयु) के अन्तिम जमाने मे उस नबी आखिरूज़ज़मा (अन्तिम काल) के बचपने की सरप्रस्ती (संरक्षता) करने की सआदत (सौभाग्य) मिली, और फिर उस नबी आखिरुजजमा के जरये मक्का और उसमें पहले दिन से मुअय्यन करदह इबादत खाना (निश्चित उपासना गृह) को अन्तर राष्ट्रीय और कियामत तक इबादत का केन्द्रीय स्थान का कर्तव्य पूरा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ अल्लाह तआला फरमाता है –

"निस्संदेह इबादत के लिये पहला धर जो लोगों के लिये बनाया गया वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सर्वथा मार्गदर्शन, संसार वालों के लिये।" (आले इम्रान : 96)

फिर अल्लाह के उस आखिरी नबी को जो उन्ही अब्दुलमुत्तलिब के यतीम (अनाथ) पोते थे, संसार के पालन कर्ता द्वारा नबी आखिरूज़्ज़माँ का उच्च स्थान प्रदान हुआ। और उसको परवरदिगार आलम की इबादत और इताअत का पूरा निज़ाम वाज़ेह और लागू करने का काम सुप्रुद किया गया कि जिसकी बिना (आधार) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सल ने अपने प्यारे दूध पीते बच्चे और उनकी माँ को बेयार व मददगार (असहाय) वहाँ ठहरा कर रखी, और जिसको उनकी औलाद ने अपनी इच्छाओं और दुनयावी उद्देश्यों को सामने रखते हुवे उनकी इच्छाओं और कामनाओं को दबा दिया था, और अपने एक रब की पासदारी को बेशुमार खुदाओं की पूजा करने के पीछे छुपा दिया था।

मक्का की भौगोलिक और प्राकृतिक स्थिति

मक्का मुकर्रमा जहाँ सबसे पहले सत्य का सन्देश दिया गया, और नबी आखिरूज़जमा (अन्तिम काल) की जन्म भूमि थी दो पहाड़ी श्रृंखला (के बीच की घाटी) में स्तिथ है, समुद्र के स्तर से उसकी ऊँचाई लगभग साढ़े तीन सौ फिट बताई जाती है। इसका अक्षांश 21 अंश दक्षिणी और लंवांश 39.5 अंश पूर्वी है, समुद्र के तटसे लगभग 75 कीलो मीटर पूरब में स्थित है, "बक्का" "मक्का" "उम्मुल कुरा" और "अल–बलदुल अमीन" इसके नाम हैं यह जिस घाटी में आबाद है वह पथरीली और तंग घाटी है, इसमें शहर मक्का मुकर्रमा पूरब से पच्छिम तक लग भग कई मील में फैला हुआ है शहर का फैलाव भी दो मील का है। इसकी घाटी "अब्तह" और "बतहा" भी कही जाती है। मक्का की यह घाटी दो पहाड़ी श्रृंखलाओं से घिरी हुई है, जो पच्छिम से शुरू होकर पूरब तक चले गए हैं, उनमें एक श्रृंखला उत्तरी है और एक दक्षिणी, इन दोनों सिलसिलों (श्रृंखलाओं) को "अख़शबान" कहते हैं।[1]

(1) तारीखुल अरब कबलल इस्लाम : 4/7

खूब इबादत कर लो

सनाअल्लाह सना

सारे माह में जो बेहतर है
अज़मत में सब से बरतर है
वह अल्लाह का माहे मुबारक
यअ़नी ये रमज़ान मुबारक
फर्ज़ मुसलमानों पे रोज़े
एक माह के किये हैं रब ने
थोड़े दिन हैं ये गिन्ती के
फ़ाइदे उस में रब ने रखे
हर पल नाज़िल होती बरकत
आम है इस में रब की रहमत
खूब इबादत इस में कर लो
और जबाँ को ज़िक्र में रखो
खालिस एक इबादत रोंज़ा
रब की खास इनायत रोजा
कुर्आ को इस माह से निस्बत
मोमिन को कुर्आ से महब्बत
इस में खूब तिलावत कीजे
रब को अपने राजी कीजे
खुले हैं जन्नत के दरवाजे
दोज़ख़ बन्द है हुक्मे रब से
जितनी नेकी चाहो कमा लो
जैसे चाहो रब को मना लो
तुम भी रोज़े रखते रहना
और गीबत से बचते रहना
की जिस ने रोज़े की हिफाज़त
उससे रब करता है महब्बत
हर नेकी का अज्र जुदा है
रोज़े का बदला तो ख़ुदा है
किसी को गर मिल जाए ख़ुदा ही
हाजत उस की क्या है बाकी
रोज़े अच्छी तरह से रखो
और ख़ुदा को हासिल कर लो

किस्त–2

पति पत्नी के पारस्परिक कर्तव्य

– अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी

एक और आयत में अल्लाह तआला ने नर नारी की रचना तथा उनके पारस्परिक कर्तव्यों की व्याखया इस प्रकार की है –

"ऐ लोगो! अपने उस पालनहर को धयान में लाकर उस से डरो जिस ने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जीव की जाति का उस का जोड़ा बनाया, और इन दोनों से बहुत से पुरुषों तथा स्त्रियों को फैलाया। उस अल्लाह से डरो जिस के माध्यम से तुम एक दूसरे से अपना अधिकार मांगते हो और रहिमों (रिश्तों नातों) के विषय में डरो और उनका ध्यान रखो अल्लाह तुम्हारी देख भाल कर रहा है। (4:1)

हुजूर सल्लाहु अलैहि व सल्लम यह आयतें निकाह के खुत्बों में अधिकतर पढ़ा करते थे। इन आयतों में मानव जाति के पहले जोड़े की रचना का वर्णन है जिस से करोड़ों पुरुष–स्त्री पैदा हुए। फिर इस घटना को भूमिका बना कर यह परिणाम बुद्धिगम्य (जेहन नशीन) कराया है कि फिर हम अपने कारोबार और व्यवहार में अपने उस वास्तविक रचयता का और उन सम्बन्धों का ध्यान रखें जो हमारी सृष्टि का साधन तथा माध्यम हैं। भली भांति ध्यान दें तो हम को ज्ञात होगा कि हर प्रकार नातों तथा सम्बन्धों का आधार यही निकाह है, यह न होता तो संसार का कोई नाता अस्तित्व में न आ सकता। इस कल्पना बिन्दु से भी इस संसार में बहुत बड़ा महत्व है कि इसी से सांसारिक प्रेम तथा स्नेह का आरंभ होता है।

निकाह का नैतिक उद्देश्य यह है कि पुरुष तथा स्त्री में सदाचार और नैतिक पवित्रता उत्पन्न हो। कुर्आन निकाह के विषय में कहता है –

"नैतिक पवित्रता के यिले न कि काम इच्छा की पूर्ति के लिये।" (5:5)

इसी लिये हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार नव यूवको को सम्बोधित कर के कहा : हे यूवकजनों! तुम में से जिस को निकाह की शक्ति हो वह निकाह कर ले इस से नयन नत रहें गे तथा लज्जा अंग सुरक्षित रहेंगे। और जिस में निकाह का सामर्थ्य न हो वह उपवास (रोज़े) रखे कि इस से काम इच्छा टूटती है। (इब्निमाजा)

निकाह के इन उद्देश्यों की पूर्ति इस पर निर्भर है कि दोनों में मेल जोल तथा प्रेम भाव प्रकट रहे तथा हर अवसर पर जहाँ सम्बन्धों के प्रभावित होने का भय हो मेल के लिये तत्पर रहना चाहिये, और प्रस्थितियों के सुधार की दोनों को समान प्रयास करना चाहिये, इसी लिये पति–पत्नी में झगड़ा आ जाने पर सुधार का बार बार आग्रह किया गया है। कुर्आन मजीद में है :–

यदि यह पति सुधार चाहें। (2:230)

सुधार करो और तकवा करो (सयंम अपनाओ) (4:129)

कहीं इसी सुधार को सीमा आबद्ध स्थापित करना कहा गया है

"और यह दम्पद अल्लाह की सीमाओं के आबद्ध रहें। (2:230)

जाहिलीयत में दस्तूर था कि मर्द कसम खा लेते थे कि वह अपनी बीवियों के साथ नेक सुलूक और अच्छा बरताव नहीं करें गे और जब उन्हें कोई समझाता तो कहते कि हम कसम खा चुके हैं, मजबूर हैं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह्य की जबान में ऐसे लोगों को फरमाया :

अनुवाद : और खुदा को अपनी कसमों को हथकन्डा न बानाओ कि अच्छा सुलूक न करो और तक्वा (संयम) नीज लोगों के बीच मेल मिलाप न रखो और अल्लाह सुनता और जानता है। (बकरह : 224)

इस आयत के बाद औरतों से कसम खा कर अलाहिदगी इख्तियार कर लेने और तलाक देने का जिक्र है, इस से मालूम हुआ कि इन नसीहतों का जियादा तर तअल्लुक ज़न व शौ (दम्पद) के मुआमले से है और यह भी मालूम हुआ कि मर्द को औरत के साथ अच्छे व्यवहार और परहेजगारी (सयंम) का बरताव, मेल जोल और बनाव का तरीका

अपनाना चाहिये।

नेक बीवियों के अवसाफ (गुण) कुर्आने पाक ने यह बातए हैं :

तो नेक बीवियाँ शौहरों की फरमाँ बरदार (आज्ञाकरिणी) होती हैं और शौहर के पीठ पीछे शौहर के माल व दौलत और इज्जत व आब्रू की हिफाजत करती हैं। (4:34)

गोया औरत के फराइज (कर्तव्य) यह हैं कि वह अपने शौहरों की फरमाँ बरदार रहें। उनके माल व दौलत और मिल्कियत की जिन की हिफाजत उन के सिपुर्द है पूरी निगरानी रखें और उनकी इज्जत व आब्रू की जो खुद उन की अपनी इज्जत व आब्रू है शौहर की गैर मौजूदगी में भी हिफाजत करें। मुखतसर लफ्जों में औरत के सिहगाना फ़राइज (त्रिकर्तव्य) इताअत, सलीका मन्दी और इस्मत व इफ्फ़त (पति का आज्ञा पालन, सुशीलता तथा सतीत्व) हैं। हदीस में है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "तक़वा के बअ़द स्वालेह औरत से बढ़ कर कोई चीज नहीं कि शौहर उस को जो कहे वह माने, शौहर जब उस की तरफ देखे तो वह उसको खुश कर दे और अगर शौहर उस को कसम देकर कुछ कहे तो वह उस की कसम पूरी कर दे और शौहर घर पर न हो तो अपने आप की और उस के माल की पूरा हिफाज़त करे। (इब्नि माजा किताबुनिनकाह)

ज़न व शौ (पति–पत्नी) बाहमी हुकूक की तशरीह (स्पष्टीकरण) आँ हज़रत सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल विदाअ़ के मशहूर खुत्बे (भाषण) में इन अलफाज में फरमाई

"लोगो औरतों के हक में मेरी नेकी की वसीयत को मानों कि यह तुम्हारे हाथों में कैद हैं। तुम सिवा इसके किसी और बात का हक नहीं रखते कि अगर वह खुली बेहयाई का काम करें तो उन को ख्वाब गाहों (विस्तरों) में अलाहदा कर दो, और उनको हल्की मार मारो तो अगर वह तुम्हारी बात मान ले तो फिर उन पर इलजाम लगाने के पहलू न ढून्ढो, बेशक तुम्हारा औरतों पर और औरतों का तुम पर हक है। तुम्हारा हक तुम्हारी औरतों पर यह हक कि वह तुम्हारे बिस्तर को दूसरों से पामाल न कराएं जिन को तुम पसन्द नहीं करते और न तुम्हारे घरों में उन को आने की इजाजत दें जिन का आना तुम को पसन्द नहीं और हाँ उन का हक तुम पर यह है कि उन के पहनाने और खिलाने में नेकी करो।" (इब्नि माजा)

एक और मौकिअ़ पर एक शख्स ने आकर दरयाफ़्त किया कि या रसूलुल्लाह! बीवी का हक शौहर पर क्या है? फरमाया :

"जो खुद खाए उसको खिलाए, जो खुद पहने तो उस को पहनाए, न उस के मुंह पर थप्पड़ मारे, न उसको बुरा भला कहे, न घर के अलावा उस की सजा के लिये उसको अलाहदा करे।" (इब्नि माजा, किताबुन्निकाह)

दूसरी तरफ आप ने औरतों को हुक्म दिया कि वह अपने शौहरों की पूरी इताअत करें यहाँ तक फरमाया कि "अगर खुदा के सिवा किसी और को सजदा करने का मैं हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सजदा करे।

एक मशहूर हदीस में आपने फरमाया :

"तुम में सब से बेहतर वह हैं जो अपनी बीवियों के लिये बेहतर हैं।" (इब्नि माजा)

जारी....

❑❑

माहे रमज़ान

अब्रार करत पूरी

माहे रमज़ान पुर फ़ज़ीलत है
इस का हर लम्हा बेश कीमत है

मोमिनो इक्तिसाबे फैज़ करो
शफकते रब हर साअत है

अज़ सह्र ता वक्ते इफ्तार
साँस लेना भी इक इबादत है

दीन व दुन्या में काम आएंगे
नेक अअ़माल की ज़रूरत है

हक़ तआला के नाम पर रोज़ा
फर्ज़ है और वज्हे रहमत है

पढ़ के कुर्आन झोलियाँ भर लो
आज कल मौसिमे तिलावत है

है तरावीह का निज़ाम इस में
यह नमाज़ इत्तिबाअ़े सुन्नत है

है रजाए ख़ुदा यह अब्रार
रोजा रखना बड़ी सआदत है

रिसालत का बयान

मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी

रसूलों और नबियों के नाम और उन की तादाद

सहीह सहीह यह बताना मुशकिल है कि दुन्या में कितने रसूल और नबी आए और कहां कहां, किस किस मुल्क में और किस जमाने में भेजे गये। तारीखी रिवायतों से पता चलता है कि एक लाख से जियादा नबी व रसूल दुन्या में आए, कुर्आन पाक में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अलावा पचीस और नबियों और रसूलों के नामों का जिक्र है।

कुर्आन पाक में कई जगह बहुत से अंबिया और रसूलों का जिक्र करने के बाद अल्लाह तआला ने हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से खिताब कर के फरमाया–

और कितने रसूलों के वाकिआत को हमने तुम से बयान किया और कितने ही रसूलों के वाकिआत को नहीं बयान किया। (4:164)

जिन रसूलों पर किताबें नाजिल हुई हैं उन में पांच का जिक्र कुर्आन पाक में है :

(1) "सुहुफे इब्राहीम" हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुए। (2) तौरात, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुई। (3) जबूर, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुई। (4) इंजील, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुई। (5) कुर्आने पाक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाजिल हुआ।

नुबुव्वत अल्लाह का अतीया है

रिसालत और नुबुव्वत के सिलसिले में यह बात भी याद रखनी जरूरी है कि नुबुव्वत किसी कोशिश और जिद्दो जहद से हासिल नहीं की जा सकती। यह अल्लाह तआला का मखसूस इनआम और अतीया है वह जिस बन्दे को चाहता है दे देता है। कोई बड़े से बड़ा इन्सान अगर चाहे कि वह अपनी कोशिश से यह मरतबा हासिल करे तो वह नहीं हासिल कर सकता।

यह नुबुव्वत अल्लाह का इनआम है वह जिसे चाहता है देता है। (57:21)

यह नुबुव्वत अल्लाह का फज्ल है वह जिस को चाहता है इस से नवाजता है। (3:74)

मुअजिज़ात

दुन्या में जितने अंबिया (अ0) तशरीफ़ लाए, उन सब की पाकीजा जिन्दगी और उनका बे दाग़ किरदार उनकी नुबुव्वत की सब से बड़ी दलील और एक मुअजिज़ा था, लेकिन अल्लाह तआला उनको बहुत से मादी मुअजिज़ात भी अता करता रहा है ताकि उन से उन की नुबुव्वत की मजीद तस्दीक़ हो जाए। मसलन हज़रत इब्राहीम (अ0) पर आग ठन्डी और गुलजार हो गई। हज़रत इस्माईल (अ0) के लिये अल्लाह तआला ने आबे ज़मज़म जारी कर दिया, हज़रत मूसा (अ0) को यदे बैज़ा (प्रकाशित हाथ) दिया और उनकी लाठी को सांप बना दिया, बहरे कुलजुम (कुलजुम सागर) के पानी को फाड़ कर रास्ता दे दिया और उस से पार कर दिया और फिरऔन को डुबा दिया। हज़रत सुलैमान (अ0) को इतनी वसीअ (व्यापक) हुकूमत दी कि इन्सान तसव्वुर भी नहीं कर सकता (उस में जिन्नात भी शामिल थे और चरिन्द व परिन्द भी) हज़रत ईसा (अ0) मुर्दों को जिन्दा कर देते थे और खुद जिन्दा आसमान पर उठा लिये गये मगर खातिमुल अंबिया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत से मादी मुअजिज़ों के साथ बहुत से मअनवी मुअजिज़े भी अल्लाह तआला ने इनायत किये हैं। इन मअनवी मुइजिज़ों में सबसे बड़ा मुअजिज़ा आप की सीरते मुबारक और कुर्आन पाक है। अल्लाह तआला ने खुद इस का जिक्र अपने खास शाहना अन्दाज में फरमाया है :

अनुवाद : "हमने आपको सूर–ए–फातिहा इनायत की है जिसमें सात आयतें हैं जो बार बार पढ़ी जाती है। (15:87)

मैं एक मुद्दत तक तुम्हारे अन्दर उम्र गुजार चुका हूँ जरा भी गौर नहीं करते यअनी अगर मेरी पाकीज़ा जिन्दगी पर गौर करते तो तुमको ईमान लाने में जरा भी देर न लगती। (10:16)

जारी...

किस्त 16

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षकों के लिय

—.डॉ. सलामत उल्लाह

ताल मेल की विधियाँ

हर्बार्ट की विधि :

विख्यात शिक्षाविद् हर्बार्ट और उसके अनुयाइयों ने शैक्षिक उद्देश्य की समरसता को कायम रखने के लिये ताल मेल (रब्त) की विधि का सुझाव दिया है। हर्बार्ट के नज़दीक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का निर्माण है, और "आचरण" "इरादा" पर निर्भर है। फिर वह कहता है कि "इरादा" का दारोमदार "इच्छाओं" पर, इच्छाओं का "दिलचस्पियों" पर और दिलचस्पयों का सिलसिला "विचार" पर है। इस लाजिक की बुनियाद पर उस का कहना है कि अगर किसी व्यक्ति की विचार शृंखला को व्यवस्थित कर दिया जाये अर्थात उस में कोई गैप बाकी न रहने पाये तो उसका किरदार पुख्तः होगा, क्योंकि एक व्यवस्थित और संरचित विचार शृंखला एक मजबूत संकल्प शक्ति पैदा करेगी। अतः उसका कहना है कि शिक्षा का काम यह है कि वह विचारों की एक शृंखला पैदा करे, और यह स्थिति तभी पैदा हो सकती है जब स्कूल की तमाम शैक्षिक गतिविधियाँ एक दूसरे से सम्बद्ध हों। विभिन्न विषयों की अलग अलग तालीम मस्तिष्क में विचारों का एक बेरब्त (बेजोड़) सिलसिला पैदा करेगी। और इस का नतीजा एक ढुलमुल संकल्प शक्ति और कमजोर व्यक्तित्व के रूप में जाहिर होगा। ऐसे व्यक्ति के मंसूबों और कामों में ताल मेल की कमी होगी। उसके क्रिया कलाप में अक्सर विरोध पाया जायेगा। वह दो रंगी व्यक्तित्व की एक दिलचस्प मिसाल पेश करेगा। मिसाल के तौर पर मुमकिन है कि वह धार्मिक विश्वास के लेहाज से एक उच्च व्यक्तित्व का मालिक हो। एक खास हल्कः के लोगों के साथ बड़ी ईमानदारी और इन्साफ से पेश आये। लेकिन तिजारती मैदान में बड़ी से बड़ी बेईमानी और धोखा बाजी करते हुऐ तनिक भी न हिचकिचाये।

सामूहिक विषयों का सिद्धान्त

विचारों की शृंखला को व्यवस्थित करने के लिये हर्बार्ट के अनुयाइयों ने "सामूहिक विषयों" का सिद्धान्त गढ़ा है। उनका विचार है कि यह काम बहुत आसानी से किया जा सकता है। यदि किसी एक विषय को कुल तालीम का सेन्टर बना दिया जाये और शेष विषयों को इस से समबद्ध कर दिया जाये। उन्होंने अपनी स्कीम में इतिहास को केन्द्र बिन्दु की हैसियत दी है। क्यों कि उनका विचार है कि इस के द्वारा उच्च नैतिक मूल्य प्राप्त किये जा सकते हैं। उनकी स्कीम में साहित्यकी का चयन इस लिये किया गया है कि वह इतिहास की शिक्षा के लिये जरूरी है या वह इसे प्रभावित करता है। कला और बेल बूटे बनाना वास्तुकला के इतिहास से जोड़ी गई है। किले, जहाज, सिक्के, लड़ाई के सामान व अन्य ऐतिहासिक रूचि की चीजें तैयार करने में ड्राइंग और गुलकारी (अल्पना) का प्रयोग सुझाया गया है। भाषा इतिहास की विषयवस्तु का एक महत्वपूर्ण पहलू है। अतएवं इस स्कीम में भाषा के लिये विषय वस्तु की कमी नहीं है। वहाँ यह बात स्वीकार की गई है कि इसमें गणित और प्राकृतिक साइंस के लिये पर्याप्त अवसर नहीं है। लेकिन इस

सिद्धान्त के पक्षधर इस कठिनाई का यह हल पेश करते हैं कि भूगोल इतिहास के एक सहयोगी की हैसियत से दाखिल किया जा सकता है। जिसका सम्बन्ध हयूमीनिटीज और साइंस दोनों से है। इस लिये इसके जरिये हिसाब और जनरल साइंस दोनों की भी शिक्षा हो सकेगी।

इस सिद्धान्त की खामियाँ

कई कारणों से यह सिद्धान्त ठीक नहीं है, प्रथम तो यह गल्त है कि इन्सानी सीरत व किरदार मात्र वाहय रूप से मालूमात में ताल मेल कर के बनाई जा सकती है। किसी चीज को जान लेने से यह लाजिम नहीं आता कि उस की झलक जिन्दगी पर जरूर पडेगी। बहुत मुमकिन है कि एक व्यक्ति यह जानता हो कि झूठ बोलना या चोरी करना बुरा है और इसके बावजूद वह दोनों गुनाह करता हो यह कथन कि "ज्ञान शक्ति है" अनिवार्यतः सही नहीं है। इल्म उसी समय एक ताकत होगा जब कि उस के साथ अमल भी हो। बिना अमल के इल्म एक बेजान जिस्म की तरह है। अगर यह मान लिया जाये कि सीरत कुछ सुगठित ज्ञान के जरियाः बन सकती है। तो भी स्कूल शिक्षा इसके लिये ना काफी है क्यों कि विचार श्रृंखला की समरसता मात्र स्कूल की शिक्षा से पैदा नहीं की जा सकती है। बच्चे की जिन्दगी का बड़ा हिस्सा स्कूल के बाहर गुजरता है। इस दौरान अनेक प्रकार के विचार उस के मन तक पहुंच सकते हैं जिन का उस्ताद को कभी शुबह तक नहीं हो सकता। टीचर कितनी भी होशियारी से कल्पनाओं को एक विचार श्रृंखला में बाँधने का प्रयास करे उसे इस बात का कभी यकीन नहीं हो सकता कि रेखा गैप बाकी नहीं रहा है जो उस के तमाम प्रयासों को बर्बाद कर सकता है।

इस सिद्धान्त में सब से बड़ी खामी यह है कि केन्द्रीय विषयों के अलावा किसी विषय का स्वाभाविक क्रम कायम नहीं रह सकता अनेक विषयों में जैसे भूगोल, गणित, विज्ञान आदि में थोड़ी बहुत एक प्रकार की निर्धारित क्रम बद्धता होती है जिस की अनदेखी कर देने से विषयों के आंतरिक भागों के पारस्परिक सम्बन्ध समझ में नहीं आ सकते। किसी एक विषय के लिये अन्य तमाम विषयों की विधिवत शिक्षण का कुर्बान कर देना एक बड़ी नाइन्साफी है और लाभ से अधिक हानि होने की आशंका है।

जारी....

❑❑

अवाम के ज़ख़्मों पर मरहम

एम0 हसन अंसारी

"मुल्क को एक ऐसे अभियान और नेतृत्व की ज़रूरत है जो अवाम के ज़ख़्मों पर मरहम का काम करे। जो सरापा हमदर्द व गमगुसार (दुखहरन) हो, जो झूठी इज्जत, सस्ती शुहरत और बदले की भावना से पाक व बे परवाह हो। जिस अभियान का एक एक व्यक्ति हिंसा, अनारकी और बिखराव व अशान्ति से नफरत करे और अमन पसन्दी, प्रेम और भाईचारा व निःस्वार्थ व निष्ठा की प्रतिमूर्ति हो। बिगड़े हुए हालात का सुधार, बिगड़े हुए इन्सानों और अप्रशिक्षित, हिंसा को पसन्द करने वाले मजमा के जरियः नहीं किया जा सकता। बिगाड़ दूर करने के लिये पैगम्बरानः किरदार व अमल और ईशभक्तों की सी विशेषतायें व गुण जरूरी है। ऐसे लोग चाहे मुट्ठी भर हों मगर वही ऐसी टिकाऊ और खुशगवार क्रान्ति ला सकते हैं जिस की छाया में इन्सानियत का थका माँदः, बेचैन और परेशान क़ाफिला इतमीनान व सुकून की सांस ले सके।"

(इस्हाक जलीस नदवी)

❑❑

؟ आपके प्रश्नों के उत्तर ?

मुफ़्ती मु0 ज़फर आलम नदवी

प्रश्न : तरावीह् की नमाज़ की जमाअ़त का क्या हुक्म है?

उत्तर : तरावीह् की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ना भी जाइज़ है, तन्हा भी जाइज़ है, लेकिन इस का मस्जिद में जमाअ़त से पढ़ना मुस्तह़ब है। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सह़ाबा को तीन रातें तरावीह् जमाअ़त से पढ़ाई, चौथी रात आप इस अन्देशे से बाहर तशरीफ़ नहीं लाए कि कहीं तरावीह् की नमाज़ भी मुसलमानों पर फ़र्ज़ न कर दी जाए। फिर लोग मस्जिद में या अपने अपने घरों में फ़र्दन फ़र्दन (अकेले अकेले) तरावीह् पढ़ते रहे यहां तक कि ह़ज़रत उमर ने अपने ज़माने में फिर उन्हें मस्जिद में एक इमाम के पीछे जमअ़ कर दिया क्योंकि अब तरावीह् के फ़र्ज़ हो जाने का अन्देशा नहीं रहा।

(अल फिक्हुस्सुन्नः 1:195)

अह्नाफ़ के नज़दीक तरावीह् की जमाअ़त पूरी ब़स्ती वालों के लिये सुन्नते किफ़ाया है यअ़्नी अगर चन्द लोग जमाअ़त से तरावीह् पढ़ लें तो दूसरों से इस सुन्नत का मुतालबा साक़ित हो जाता है। मालिकीया के नज़दीक तरावीह् की जमाअ़त मुस्तह़ब है, शाफ़अ़ीया और ह़ंबलीया के नज़दीक तरावीह् की जमाअ़त सब के लिये सुन्नत है।

(अल फ़िक्ह अ़ला अ़ल मज़ाहिबिल अल अरबआ़ 1:441)

प्रश्न : तरावीह् की नमाज़ कितनी रकअ़तों से पढ़ना चाहिये?

उत्तर : ह़ज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तीन रात लोगों को आठ रक़आत नमाज़ पढ़ाई और फिर वित्र पढ़ाए फिर अगली (यअ़नी चौथी) रात लोगों ने आप का इन्तिज़ार किया मगर आप बाहर तशरीफ़ न लाए।

(तिबरानी, इब्ने ख़ुज़ैमा)

ह़ज़रत इब्नि अ़ब्बास से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रमज़ान में जमाअ़त से अलग बीस रकअ़त नमाज़ पढ़ा करते थे। (बैहकी)

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि0) के मुतअ़ल्लिक़ एक रिवायत में है कि उन्होंने ह़ज़रत उबइ बिन कअ़ब और तमीमे दारी को ह़ुक्म दिया कि लोगों को ग्यारह रकअ़त (वित्र के साथ) नमाज़ पढ़ाएं। (मुवत्ता इमाम मालिक) दूसरी रिवायत में ग्यारह के बजाए इक्कीस रकअ़तों का ज़िक्र है। (मुह़म्मद नस्र) तीसरी रिवायत में है कि ह़ज़रत उ़मर के ज़माने में लोग तरावीह तेरह रकअ़तें वित्र के साथ पढ़ा करते थे। (मुह़म्मद बिन नस्र) चौथी क़िस्म की रिवायतों में वित्र के साथ तेईस रकअ़तों का ज़िक्र है। (मुह़म्मद नस्र, बैहकी, मुवत्ता इमाम मालिक) उसके बअ़द ज़ियादा तर बीस रकअ़तों का रिवाज रहा वित्र के अ़लावा।

ह़नफीया और शाफ़ईया के नज़दीक तरावीह् में बीस रकअ़तें (वित्र के अ़लावा) सुन्नत हैं उन का इस्तिदलाल यह है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि0) ने आख़िर कार इसी (बीस की) तअ़दाद पर लोगों को जमअ़ किया दूसरे सह़ाबा ने इस पर उन से इत्तिफ़ाक़ किया (सहमत हुए) और बअ़द के ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन (ह़ज़रत उ़स्मान ह़ज़रत अ़ली व ह़ज़रत ह़सन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) में से किसी ने इस की मुख़ालफ़त न की। ह़ज़रत इब्नि अ़ब्बास वाली (20 रकअ़त की) रिवायत अगर्चि सनद के लिहाज़ से कमज़ोर है मगर सहीह् के ह़ुक्म' में आती है। इस लिये कि बअ़द में उम्मत ने इसे अमलन क़बूल कर लिया। इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़0) फ़रमाते हैं : तरावीह् सुन्नते मुअक्किदा है, ह़ज़रत उमर ने इस में बीस रकअ़तों को अपनी तरफ़ से जारी नहीं फ़रमाया आप ने इन का ह़ुक्म दिया तो आप के सामने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से कोई न कोई अस्ल ज़रूर होगी। इमाम सुफ़यान सौरी और अ़ब्दुल्लाह इब्नि मुबारक का मसलक भी वित्र के अ़लावा बीस रकअ़तों का था।

इमाम अहमद बिन हंबल ने तरावीह की रकअतों की कोई तअदाद मुअय्यन (नियुक्त) नहीं की वह फ़रमाते है इस बारे में मुख़तलिफ़ क़िस्म की रिवायात आई हैं। इमाम मालिक का अपने लिये इख़्तियार करदा मसलक वित्र के साथ ग्यारह रकअतों का था लेकिन उनके यहां भी हर तअदाद की गुंजाइश थी, वह फरमाते हैं हमारे यहां मदीने में वित्र के साथ उन्तालीस रकअतें और मक्के में तेइस रकअते वित्र के साथ पढ़ी जाती हैं और इन में से हर एक की गुंजाइश है।

मुहद्दिसीन हज़रात सुन्नत आठ रकअत मानते हैं अलबत्ता इस से ज़ाइद जो रकअतें पढ़ी जाएं गी सब सहीह और मुस्तहब होंगी। (फिक्हुस्सुन्ना 1:194,195) मुखतलिफ रिवायात हालात की बिना पर हैं, सब की गुंजाइश है लिहाजा जो हज़रात आठ पढ़ते हैं उनको कोई बीस पढ़ने पर मजबूर नहीं करता, लेकिन उन के लिये लाज़िम है कि वह बीस रकअत तरावीह पढ़ने पर बिदअत का हुक्म न लगएं बीस वाले तो उसे सुन्नत जानते हैं आठ वाले बीस को मुस्तहब समझें बिदअत न कहें, न बीस वाले उन को तारिके सुन्नत कहें और मेल महब्बत से रहें।

प्रश्न : ईद की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तर : ईद की नमाज़ अहनाफ़ के नज़दीक वाजिब है, हंबली के नज़दीक फ़र्ज़, और मालिकीया, शाफ़ईया और अहले हदीस उलमा के नज़दीक सुन्नते मुअक्किदा है। जिस की इब्तिदा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सन् 1 या 2 हि0 में फरमाई थी उस के बअद हर साल इस की पाबन्दी की और लोगों को इस की ताकीद फरमाई।

प्रश्न : ईद के दिन खुशी मनाने का क्या हुक्म है?

उत्तर : ईद के दिन जाइज़ हुदूद के अन्दर खाना पीना, खेलना और खुशी मनाना सब के नज़दीक मुस्तहब है। हज़रत आइशा (रज़ि0) से रिवायत है कि "एक ईद के रोज़ हबशी लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास खेल रहे थे मैं हुज़ूर (सल्ल0) के मोंढे के ऊपर से झांक कर देखने लगी तो आप ने अपने मोंढे को नीचा कर लिया और मैं आप के मोंढे के ऊपर से देखती रही यहां तक कि मेरा जी भर गया और मैं पलट गई।"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

प्रश्न : क्या ईद की नमाज़ से पहले कुछ खाना सुन्नत है?

उत्तर : हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि ईदुलफित्र के रोज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक्त तक नमाज़ के लिये नहीं निकला करते थे जब तक आप चन्द खजूरें खा न लेते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताक तअदाद में खजूरें खाया करते थे।

(बुख़ारी, मुस्नद अहमद)

प्रश्न : जो बच्चा ईद के रोज़ पैदा हुआ क्या उस की तरफ़ से भी फ़ित्रा दिया जाए गा?

उत्तर : ऐसे बाप का बेटा जिस पर फित्रा वाजिब है अगर वह ईद के रोज़ यअनी पहली शव्वाल को सुब्हे सादिक तुलूअ होने से पहले पैदा हुआ है तो उस की तरफ़ से फ़ित्रा अदा किया जाऐगा और अगर सुब्हे सादिक़ के बअद पैदा हुआ है तो उस की जानिब से फित्रा देना वाजिब नहीं।

प्रश्न : एक आदमी की तरफ़ से कितना फ़ित्रा देना चाहिये?

उत्तर : एक आदमी की तरफ़ से एक साअ जौ (लग भग 3 किलो 200 ग्राम) या आधा साअ गेहूँ (लग भग एक किलो 600 ग्राम) या उस की कीमत किसी गरीब भाई को देना चाहिये, अपनी औलाद और अपने बाप दादा दादी वगैरह को फ़ित्रा देने से अदा न होगा, लेकिन ग़रीब भाई, बहन, चचा, चची, ख़ाला, फूफी वग़ैरह को फ़ित्रा दे सकते है।

प्रश्न : क्या जिस को फ़ित्रा या ज़कात दें उसे बता दें कि यह ज़कात या फ़ित्रा है?

उत्तर : अपने तौर पर जान लें कि वह फ़ित्रे या ज़कात का मुस्तहिक़ है फिर उसे बताने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं।

प्रश्न : कितने माल पर ज़कात फर्ज़ है?

उत्तर : 612 ग्राम चान्दी या 87 ग्राम सोना या 612 ग्राम चान्दी खरीदने भर के पैसे हों और उन पर साल गुजर जाए तो ज़कात फ़र्ज़ हो जाए गी।

❑❑

इस्लाम आतंक नहीं
अनुसरणीय जीवन-आदर्श

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

सच्चाई क्या है? यह जानने के लिये हम वही तरीका अपनाएंगे जिस तरीके से हमें सच्चाई का ज्ञान हुआ था। मेरे द्वारा शुद्ध मन से किये गये इस पवित्र प्रयास में यदि अनजाने में कोई गलती हो गयी हो तो उसके लिये पाठक मुझे क्षमा करेंगे।

इस्लाम के बारे में कुछ भी प्रमाणित करने के लिये यहाँ हम तीन कसौटियों को लेंगे।

1. कुर्आन मजीद में अल्लाह के आदेश।
2 पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की जीवनी।
3. हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की कथनी यानी हदीस।

इन तीनों कसौटियों से अब हम देखते हैं कि :

- क्या वास्तव में इस्लाम निर्दोषों से लड़ने और उनकी हत्या करने व हिंसा फैलाने का आदेश देता है?
- क्या वास्तव में इस्लाम दूसरों के पूजाघरों को तोड़ने का आदेश देता है?
- क्या वास्तव में इस्लाम लोगों को जबरदस्ती मुसलमान बनाने का आदेश देता है?
- क्या वास्तव में हमला करने, निर्दोषों की हत्या करने व आतंक फैलाने का नाम ही जिहाद है?
- क्या वास्तव में इस्लाम एक आतंकवादी धर्म है?

सर्वप्रथम यह बताना आवश्यक है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के महत्त्वपूर्ण एवं अन्तिम पैगम्बर हैं। अल्लाह ने कुर्आन आप पर ही उतारा। अल्लाह का रसूल होने के बाद से जीवन पर्यन्त आप (सल्ल0) ने जो किया, वह कुर्आन के अनुसार ही किया।

दूसरे शब्दों में हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन के यह 23 साल कुर्आन या इस्लाम का व्यावहारिक रूप है। अतः कुर्आन या इस्लाम को जानने का सबसे महत्वपूर्ण और आसान तरीक़ा हज़रत मुहमद (सल्ल0) की पवित्र जीवनी है, यह मेरा स्वयं का अनुभव है। आपकी जीवनी और कुर्आन मजीद पढ़कर पाठक स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि इस्लाम एक आतंक है? या आदर्श।

आप (सल्ल0) लोगों को अल्लाह का पैगाम दिया कि 'अल्लाह एक है उसका कोई शरीक नहीं। केवल वही पूजा के योग्य है। सब लोग उसी की इबादत करो। अल्लाह ने मुझे नबी बनाया है। मुझ पर अपनी आयतें उतारी हैं ताकि मैं लोगों को सत्य बताऊं।' जो लोग मुहम्मद (सल्ल0) के पैगाम पर ईमान (यानी विश्वास) लाए, वे मुस्लिम अर्थात मुसलमान कहलाए।

बीवी ख़दीजा (रज़ि0) आप पर विश्वास लाकर पहली मुसलमान बनीं। उसके बाद चचा अबू–तालिब के बेटे अली (रज़ि0) और मुंह बोले बेटे जैद व आप (सल्ल0) के गहरे दोस्त अबू बक्र (रज़ि0) ने मुसलमान बनने के लिये "अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह" यानी "मैं गवाही देता हूँ, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के रसूल हैं।" कहकर इस्लाम कुबूल किया।

मक्का के अन्य लोग भी ईमान (यानी विश्वास) लाकर मुसलमान बनने लगे। कुछ समय बाद ही कुरैश के सरदारों को मालूम हो गया कि आप (सल्ल0) अपने बाप–दादा के धर्म बहुदेववाद और मूर्तिपूजा के स्थान पर किसी नये धर्म का प्रचार कर रहे हैं और बाप–दादा के दीन को समाप्त कर रहे हैं। यह जानकर आप (सल्ल0) के अपने ही कबीले कुरैश के लोग बहुत क्रोधित हो गये। मक्का के सारे बहुईश्वरवादी काफिर सरदार इकट्ठे होकर मुहम्द (सल्ल0) की शिकायत लेकर आपके चचा अबू–तालिब के पास गये। अबू–तालिब ने मुहम्मद (सल्ल0) को बुलवाया और कहा – "मुहम्मद ये अपने कुरैश कबीले के असरदार सरदार हैं, ये चाहते हैं कि तुम यह प्रचार न करो कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है और अपने बाप–दादा के धर्म पर कायम रहो।"

मुहम्मद (सल्ल0) ने 'ला इला–ह इल्लल्लाह' (अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है) इस सत्य का प्रचार छोड़ने से इन्कार कर दिया। कुरैश के सरदार क्रोधित हो कर चले गये।

इसके बाद इन कुरैश सरदारों ने तय किया कि अब हम मुहम्मद (सल्ल0) का हर प्रकार से विरोध करेंगे। वे मुहम्मद (सल्ल0) और उनके साथियों को बेरहमी के साथ तरह–तरह से सताते, अपमानित करते और उन पर पत्थर बरसाते। इसके बाद भी आप (सल्ल0) ने उनकी दुष्टता का जवाब सदैव सज्जनता और सद्व्यवहार से ही दिया।

मुहम्मद (सल्ल0) व आपके साथी मुसलमानों के विरोध में कुरैश का साथ देने के लिये अरब के और बहुत से कबीले थे जिन्होंने आपस में यह समझौता कर लिया था कि कोईकबीला किसी मुसलमान को पनाह नहीं देगाा। प्रत्येक कबीले की जिम्मेदारी थी, जहाँ कहीं मुसलमान मिल जाएं उनको खूब मारे–पीटें और हर तरह से अपमानित करें, जिससे कि वे अपने बाप–दादा के धर्म की ओर लौट आने को मजबूर हो जाएं।

दिन–प्रतिदिन उनके अत्याचार बढ़ते गये। उन्होंने निर्दोष असहाय मुसलमानों को कैद किया, मारा–पीटा, भूखा–प्यासा रखा। मक्के की तपती रेत पर नंगा लिटाया, लोहे की गर्म छड़ों से दागा और तरह–तरह के अत्याचार किये।

उदाहरण के लिए हज़रत यासिर (रज़ि0) और उनकी बीवी हज़रत सुमय्या (रज़ि0) तथा उनके पुत्र हज़रत अम्मार (रज़ि0) मक्के के गरीब लोग थे और इस्लाम कुबूल कर मुसलमान बन गये थे। उनके मुसलमान बनने से नाराज मक्के के काफिर उन्हें सजा देने के लिये जब कड़ी दोपहर हो जाती, तो उनके कपड़े उतार उन्हें तपती रेत पर लिटा देते।'

हज़रत यासिर (रज़ि0) इन जुल्मों को सहते हुए तड़प–तड़प जाते थे। मुहम्मद (सल्ल0) व मुसलमानों को सबसे बड़ा विरोधी अबू जह्ल बड़ी बेदर्दी से हज़रत सुमय्या (रज़ि0) के पीछे पड़ा रहता। एक दिन उन्होंने अबू–जहल को बद्दुआ दे दी जिससे नाराज होकर अबू–जह्ल ने भाला मारकर हज़रत सुमय्या (रज़ि0) का कत्ल कर दिया। इस तरह इस्लाम में हज़रत सुमय्या (रज़ि0) ही सबसे पहले सत्य की रक्षा के लिये शहीद बनीं।

दुष्ट कुरैश, हज़रत अम्मार (रज़ि0) को लोहे का कवच पहना कर धूप में लिटा देते। तपती हुई रेत पर लिटाने के बाद मारते–मारते बेहोश कर देते। इस्लाम कुबूल कर मुसलमान बने हज़रत बिलाल (रज़ि0) कुरैश सरदार उमैय्या के गुलाम थे। उमैय्या ने यह जानकर कि बिलाल मुसलमान बन गये हैं, उनका खाना–पानी बन्द कर दिया। ठीक दोपहर में भूखे–प्यासे ही वह उन्हें बाहर पत्थर पर लिटा देते और छाती पर बहुत भारी पत्थर रखवा कर कहता – "लो मुसलमान बनने का मजा चखो।"

उस समय जितने भी गुलाम, मुसलमान बन गये थे उन सभी पर इसी तरह के अत्याचार हो रहे थे। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के जिगरी दोस्त हज़रत अबू–बक्र (रज़ि0) ने उन सब को ख़रीद–खरीद कर गुलामी से आजाद कर दिया।

जब मक्का में काफिरों के अत्याचारों के कारण मुसलमानों का जीना मुश्किल हो गया तो मुहम्मद (सल्ल0) ने उन्हें हब्शा जाने का आदेश दिया।

हब्शा का बादशाह नज्जाशी ईसाई था। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) का हुक्म पाते ही बहुत से मुसलमान हब्शा चले गये। जब कुरैश को पता चला, तो उन्होंने अपने दो आदमियों को दूत बनाकर हब्शा के बादशाह के पास भेजकर कहलवाया कि "हमारे यहाँ के कुछ मुजरिमों ने भागकर आपके यहाँ शरण ली है। इन्होंने हमारे धर्म से बगावत की है और आपका ईसाई धर्म भी नहीं स्वीकारा, फिर भी आपके यहाँ रह रहे हैं। ये अपने बाप–दादा के धर्म से बगावत कर एक ऐसा नया धर्म लेकर चल रहे हैं, जिसे न हम जानते हैं और न आप। ये हमारे मुजरिम हैं, इनको लेने के लिये हम आये हैं।"

बादशाह नज्जाशी ने मुसलमानों से पूछा : "तुम लोग कौन–सा ऐसा नया धर्म लेकर चल रहे हो, जिसे

हम नहीं जानते?" इस पर मुसलमानों की ओर से हज़रत जाफर (रज़ि0) बोले है बादशाह! पहले हम लोग असभ्य और गंवार थे। बुतों की पूजा करते थे, गन्दे काम करते थे, पड़ोसियों से तथा आपस में झगड़ा करते रहते थे। इस बीच अल्लाह ने हम में अपना एक रसूल भेजा। उसने हमें सत्य–धर्म इस्लाम की ओर बुलाया। उसने हमें अल्लाह का पैगाम देते हुए कहा : "हम केवल एक ईश्वर की पूजा करें, बेजान बुतों की पूजा छोड़ दें, सत्य बोलें और पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करें। किसी के साथ अत्याचार और अन्याय न करें। व्यभिचार और गन्दे कार्यों को छोड़ दें, अनाथों और कमजोरों का माल न खाएं, पाक दामन औरतों पर तोहमत न लगाएं, नमाज पढ़ें और खैरात यानी दान दें।"

हमने उसके इस पैगाम को और उसको सच्चा जाना और उस पर ईमान यानी विश्वास लाकर मुसलमान बन गये। हज़रत जाफर (रज़ि0) के जवाब से बादशाह नज्जाशी बहुत प्रभावित हुआ। उसने दूतों को यह कहकर वापस कर दिया कि ये लोग अब यहीं रहेंगे।

मक्का में मुसलमानों के लिये कुरैश के अत्याचार असहनीय हो चुके थे। इससे आप (सल्ल0) ने मुसलमानों को मदीना चले जाने (हिज़रत) के लिये कहा और हिदायत दी कि एक–एक, दो–दो करके निकलो ताकि कुरैश तुम्हारा इरादा भाँप न सकें। मुसलमान चोरी–छिपे मदीने की ओर जाने लगे। अधिकाँश मुसलमान निकल गये लेकिन कुछ कुरैश की पकड़ में आ गये और कैद कर लिय गये। उन्हें बड़ी बेरहमी से सताया गया ताकि वे मुहम्मद (सल्ल0) के बताए धर्म को छोड़कर अपने बाप–दादा के धर्म में लौट आएं।

अब मक्का में इन बन्दी मुसलमानों के अलावा अल्लाह के रसूल (सल्ल0), अबू बक्र (रज़ि0) और अली (रज़ि0) ही बचे थे, जिन पर काफिर कुरैश घात लगाये बैठे थे। मदीना के लिये मुसलमानों की हिज़रत से यह हुआ कि मदीना में इस्लाम का प्रचार–प्रसार शुरू हो गया। लोग तेजी से मुसलमान बनने लगे।

एक तरफ कुरैश लगातार कई सालों से मुसलमानों पर हर तरह के अत्याचार करने के साथ–साथ उन्हें नष्ट करने पर उतारू थे, वहीं दूसरी तरफ आप (सल्ल0) पर विश्वास लाने वालों (यानी मुसलमानों)को अपना वतन छोड़ना पड़ा, अपनी दौलत, जायदाद छोड़नी पड़ी इसके बाद भी मुसलमान सब्र का दामन थामे ही रहे। लेकिन अत्याचारियों ने मदीना में भी उनका पीछा न छोड़ा और एक बड़ी सेना के साथ मुसलमानों पर हमला कर दिया।

युद्ध की अनुमति

जब पानी सिर से ऊपर हो गया तब अल्लाह न भी मुसलमानों को लड़ने की इजाजत दे दी। अल्लाह का हुक्म आ पहुंचा –

"जिन मुसलमानों से (खामखाह) लड़ाई की जाती है, उनको इजाजत है (कि वे भी लड़ें), क्योंकि उन पर जुल्म हो रहा है और ख़ुदा (उनकी मदद करेगा,) वह यकीनन उनकी मदद पर कुदरत रखता है।"

(कुर्आन, 22:39)

असत्य के लिये लड़ने वाले अत्याचारियों से युद्ध करने का आदेश अल्लाह की ओर स आ चुका था। मुसलमानों को भी सत्य–धर्म इस्लाम की रक्षा के लिये तलवार उठाने की इजाजत मिल चूकी थी। अब जिहाद (यानी असत्य और आतंकवाद के विरोध के लिये प्रयास अर्थात् धर्मयुद्ध) शुरू हो गया।

सत्य की स्थापना के लिये और अन्याय, अत्याचार तथा आतंक की समाप्ति के लिए किये गये जिहाद (यानी धर्मरक्षा व आत्मरक्षा के लिये युद्ध) में अल्लाह के रसूल (सल्ल0) की विजय होती रही। मक्का व आसपास के काफिर मुशरिक औंधे मुंह गिरे।

इसके बाद पैगम्बर मुहम्मद ((सल्ल0)) दस हजार मुसलमानों की सेना के साथ मक्का में असत्य व आतंकवाद की जड़ को समाप्त करने के लिये चले। अल्लाह के रसूल ((सल्ल0)) की सफलताओं और मुसलमानों की अपार शक्ति को देख मक्का के काफिरों ने हथियार डाल दिये। बिना किसी खून–खराबे के मक्का फतह कर लिया गया। इस तरह सत्य और शान्ति की जीत तथा असत्य और आतंकवाद की हार हुई।

जारी.....

स्वतंत्रा संग्राम में नदवतुलउलमा की भूमिका

अब्दुल वकील नदवी

अनुवाद - हबीबुल्लाह आज़मी

नदवतुलउलमा एक अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन

1857 को भयंकर घटना के बाद कुछ बुद्ध जीवीयों को यह चिन्ता हुई कि मिल्लत की अर्थ व्यवस्था और मुसलमानों की शिक्षा, उनकी संस्कृति की सुरक्षा और निगरानी के लिए कोई उचित काम किया जाये जिस से इस घटना की क्षतिपूर्ति सम्भव हो सके। अतएवं 1966 ई0 में दारुल उलूम देवबन्द और 1875 में अलीगढ़ मुसलिम कालेज की स्थापना हुई लेकिन इन दोनों मदरसों के बावजूद एक ऐसे सर्वव्यापी (हमागीर) आन्दोलन और संस्था की आवश्यकता बरकरार थी जो आपसी विश्वास व स्वाभिमान के साथ पूरे देश में अपनी अन्दोलनकारी क्षमता से जनता और बुद्धजिवियों को खास तौर से स्वतंत्रा के संघर्ष को सकार्आत्मक और ठोस सिन्धातों के साथ कायम रख सके और इस आन्दोलन के द्वारा मिल्लत (मुसलिम समुदाय) के उन कामों को पूरा किया जाए जो अभी तक सम्भव न हो सके थे। इसी विचार को सामने रखते हुए नदवतुल उलमा का आन्दोलन वजूद में आया।

नदवतुल उलमा एक अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन था। यदि एक तरफ इसके संविधान में यह शामिल था कि मुसलमानों के विभिन्न गिरोहों को एकजुट किया जाए तो दूसरी तरफ उस की बुनियादी जरुरत यह थी कि देश की स्वतंत्रा का ऐसा वातावरण भी पैदा हो जाए जो दारुल उलूम देवबन्द और अलीगढ़ कालेज की स्थापना के बावजूद सम्भव न हो सका। मुसलमानों में ही दो बड़े गिरोह थे। उलमा का गिरोह और बुद्धजीवीयों का गिरोह दोनों में बहुत ही दूरी थी। उलमा में मस्लकी (पंथ) विरोध ने अलगाव वाद का बाजार गर्म कर रखा था और बुद्धजीवीयों का गिरोह हर किसी को दुनियावी ऐनक से देखता था। अन्ततः तमाम गिरोहों, पर्टियों और मसलकी गिरोहों के लोग कानपुर में 1311 हि0 में एक पलेटफार्म पर इकट्ठा हुए और एकता का एक जुट होने का पैगाम लेकर उठे और समाज में एक हलचल पैदा कर दी। इस संस्था का नाम नदवतुल उलमा पड़ा जिस के पेशे नजर हर समस्या का हल एकता और एकजुटता में था।

नदुवतुल उलमा की विचार धारा

चुनानचि नदवा की विचार धारा ने ऐसे बाकमाल लोग तैयार किये जो देश में फैली हर उस दूरविचार को दूर करें जो दूसरी कौमों ने देश भर में फैला रखी थीं। जैसे गैरमुस्लिमों और मुसलमानों के बीच में झगड़े की दीवारें। इस्लामी साहित्य व पुस्तकों में भड़काऊ सामग्री और मुसलमानों के गिरोहों में टकराव और इसाईयत और कादीयानियत का फैलाव को रोकना भी अंग्रेजों के खिलाफ एक जंग का मोरचा था जिसको कि नदवतुल उलमा की विचार धारा ने समझा और उसके लिये तत्पर हुए क्योंकि यदि नदवी फिक्र के उलमा इस का विरोध न करते तो देश आजाद हो जाता लेकिन जनता और खास लोग हमेशा जेहनी गुलामी में हिचकोले खाते रहते जैसा कि वतन की आजादी के 57 साल के बावजूद हम बाज चीजों में पूरे तौर से आजाद न हो सके। उन में अंग्रेजों की सभ्यता व कलचर, उनकी मक्कारी के नारे और हिन्दु मुस्लिम का भेद भाव जैसे मुद्दे बहुत महत्वपूर्ण हैं जो आज भी अपना प्रभाव दिखा रहे हैं और समय समय पर इस में घिर कर खून की होली खेल जाते हैं। जहाँ तक स्वतंत्रा संग्राम और नदवतुल उलमा का सवाल है तो नदवतुल उलमा ने कभी भी देश की अखण्डता की सुरक्षा के लिये कोई कमी नहीं छोड़ रखी।

इस्लाम के महान विचारक सैयद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं कि नदवतुल उलमा मसलके वलीयुल्लाही है। इसका वजूद स्वतंत्रा के दीप की रोशनी

को आम करने बल्कि अन्त तक पहुंचाने के लिये हुआ क्योंकि नदवतुल उलमा को हज़रत सैयद अहमद शहीद और शाह अब्दुल अज़ीज़ से एक गहरा सम्बन्ध है। यही वह सम्बन्ध है जिसने सीधे स्वतंत्रा आन्दोलन में अपनी विशेष भूमिका अदा की।

नदवतुल उलमा का विकास और हिन्दुस्तान की आजादी

मौलाना मुहम्मद अली मुंगेरी से लेकर हकीम मौलाना अब्दुल हई रायबरेलवी तक जितने माननीय उलमा ने नदवतुल उलमा के विकास में भाग लिया है वह सब के सब हिन्दुस्तान की आजादी के सच्चे परस्तार और देश प्रेमी थे और देश में उठने वाले उपद्रव से लड़ते रहे। खुद नदवी विचार के लोगों में मौलाना आजाद, मौलाना माजिद दरयाबादी, मौलाना अब्दुल बारी फिरंगी महली जैसे लोग शामिल हैं जिन्होंने लेखन व भाषण (तहरीरो तकरीर) रचना बसंकलन के द्वारा वतन की राह में आनेवाली हर रुकावट को दूर किया जो कभी देश के लिये नासूर बन सकती थी और यही वह आजादी का जमाना था जब सैयद अबुल हसन अली नदवी की पुस्तक "सैयद अहमद शहीद" प्रकाशित हुई जो आजादी के मतवालों के लिये मार्गदर्शक सिद्ध हुई जिस ने साहस और हौसला पैदा किया, निराशा को दूर किया और अंगेजों को सराब (रेत) से अधिक महत्व नहीं दिया। यही सैयद अहमद शहीद थे जिन्होंने हिन्दु राजाओं के साथ अंग्रेजों से देश को आजाद कराने के लिये कार्यक्रम तैयार किया और महाराजा गवालियार को पत्र लिखा जिस में अंग्रेजों के इस देश में बने रहने के नुकसान को स्पष्ट किया और कुछ कर सकने पर आमादा किया।

इसके अतरिक्त अल्लामा शिबली नोमानी अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी, सैयद नजीब अशरफ नदवी, अब्दुल हलीम सिद्दीकी नदवी, मौलाना अहमद अली मुफस्सिरे कुर्आन (कुर्आन के टीचरकार), मुफती इनायत अली काकोरवी, मौलाना हनीफ नदवी, मौलाना अकीलुर्रहमान सहारनपुरी नदवी, मुईन नाजिम जमीयतुल उलमा दिल्ली, मौलाना अब्दुल कादिर नदवी, मोलवी मुहम्मद इलयास नदवी आदि को इतिहास कभी भुला नहीं सकता। आइये हम इन महान लोगों की स्वतंत्रा संग्राम में भागीदारी पर प्रकाश डलते चलें ताकि हम और आप अपने पूर्वजों के कामों व राजनीतिक कारनामों से अवगत हो सकें।

अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी की स्वतंत्रा संग्राम में राजनीतिक व कौमी सेवाएं

"यह मोलवी बहुत चतुर है।" यह शब्द हिन्दुस्तान की आजादी के अलमबरदार महात्मा गांधी ने अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी के बारे में कहा था। अल्लामा नदवी का सम्बन्ध यूं तो शिक्षा और रिसर्च के कार्यों से था परन्तु उस समय पूरा हिन्दुस्तान केवल आजादी का चाहने वाला था तो क्यों कर अल्लामा पीछे रहजाते जब कि आप एक हिन्दुस्तानी थे और हिन्दुस्तान ही के देश में जिला पटना बिहार में 1884 अर्थात कांग्रेस की स्थापना से एक साल पहले पैदा हुए। शिक्षा दीक्षा प्राप्त करके जब आपने जवानी के प्रारम्भ में कदम रखा तो उस समय पूरा हिन्दुस्तान केवल आजादी का ही एक सपना हिन्दुस्तानीयों के दिलों दिमाग पर छाया हुआ था जिस के कारण सैयद साहब अपने आप को आजादी की चिनगारियों से सुरक्षित न कर सके और अपने भाषण और लेखन में अनुसन्धान (तहकीकी) क्षमता को ही लेकर स्वतंत्रा संग्राम में कूद पड़े। फिर क्या था खिलाफत आन्दोलन का स्टेज हो या जमीअतुल उलमा के जलसों की सदारत या हिजाज के प्रतिनिधि मण्डल में शामिल होना हो या हिन्दुस्तान में आजादी के जुलूस हों हर एक में आपने अपना लोहा मनवाया उसी तरह राजनीति में भी आपने अपनी क्षमता और योग्यता की धाक बिठाई। यद्यपि आपने राजनीति में कोई अधिक रुचि नहीं दिखाई फिर भी बहुत से आपने कार्नामें अंजाम दिये जो नदवा वालों के अतिरिक्त स्वतंत्र भारत के लिये गर्व का विषय है।

जब 1914 में तुर्की ने महायुद्ध में भाग लिया और हिन्दुस्तान के कई बड़े लीडर गिरिफ्तार हो गये तो मौलाना भी नये ग्रूप में शामिल

होकर नियमित रूप से राजनीतिक्र प्लेटफार्म की आवाज बन गये। आप को राजनीति में लाने वाले मौलाना अब्दुल बारी फिरंगी महली हैं और उन्हीं की देख रेख में 1914 से 1916 तक बराबर राजनीतिक कार्यों में उन्नति की मंजिलें तय करते रहे ओर 1917 में मजलिसे उलमा बंगाल के एक महत्वपूर्ण अधिवेशन में शरीक हुए और बिना किसी संकोच के मौलाना आजाद्र जैसे मुस्लिम मार्गदर्शक का नाम लिया जो कि उस माहोल में नाम लेना अपनी गिरिफ्तारी और अंग्रेजों के अत्याचार को दावत देना था।

इसके अतिरिक्त 1919 में मजलिसे खिलाफत लखनऊ के स्टेज से आपने भाषण दिया और 1920 में खिलाफत प्रतिनिधि मण्डल (वफदेखिलाफत) जो हिन्दुस्तान से यूरोप गया उस की तरजुमानी और हिन्दुस्तानी मुसलमानों के प्रतिनिधित्व (नुमाइंदगी) के लिए आप को भेजा गया। जब कि उसी वर्ष कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में उन्होंने भाग लिया। और असहयोग आन्दोलन में भी आगे आगे रहे। बाद में आप कांग्रेस कार्यकारर्ण के मेमबर और जमीयततुल उलमा की कार्यकारणी के सदस्य चुने गये।

1923 में बिहार खिलाफत की अध्यक्षता फरमाई और 1925 में कांग्रेस और खिलाफत कानफ्रेंस के संयुक्त अधिवेशन में शरीक हुए और उसी वर्ष दूसरा प्रतिनिधिमण्डल जो हिजाज की यात्रा पर खिलाफत कमेटी परस्ताव को शाह के सामने पेश करने के लिये रवाना हुआ उस में भी आपने प्रतिनिधि की भूमिका अदा की। वहाँ से वापस होकर जमीयतुल उलमा के महत्वपूर्ण अधिवेशन 1916 कलकत्ता के अध्यक्ष चुने गये और आपने एक यादगार अध्यक्षी भाषण प्रस्तुत किया जो एक ऐतिहासिक महत्व रखता है। इस के अतिरिक्त 1944 में कांग्रेस की अध्यक्षता की और 1951 में सिलहट पाकिस्तान में जमीयतुल उलमा की अध्यक्षता की। यद्यपि मौलाना इसके अतिरिक्त भी बहुत से जलसों और आन्दोलनों और परामर्शों में शरीक रहे और मआरिफ पत्रिका के द्वारा फिर अल हिलाल में इमामुलहिन्द मौलाना आजाद के सहयोग से और मुलाकातों, पत्रों और भाषणों के द्वारा देश की विचारधारा, संस्कृति, आर्थिक कार्यों में मार्गदर्शन किया और हिन्दुस्तान को गुलामी से निकालने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार भूमिका अदा की। अफगानिस्तान की एक महत्वपूर्ण यात्रा भी यादगार है जो उन्होंने अल्लामा इकबाल और सर रास मसऊद के साथ की। उन्होंने स्वतंत्रा आन्दोलन में भाग लेने वालों की न केवल सरपरस्ती की बल्कि उनके साथ खड़े भी हुए। इस विषय पर कनवेनशनों अधिवेशनों, कानफ्रेंसों, सिमपोजीयमों को भी सम्बोधित किया। और लाभकारी और बहुमल्य परामर्श देते रहे। इस सिलसिले में उनके लेखों का एक बड़ा भण्डार आज भी मौजूद है।

मगर आपने अपने स्वभाव व रुचि के अनुसार राजनीति से कोई दिलचस्पी न लेकर लेखन, व संग्रह अपना उद्देश्य बनाया क्यों कि आप खुद लिखते हैं कि मैं राजनीति से घबराता नहीं हूँ लेकिन कौम मुझ से एक ही काम ले सकती है या इल्म (ज्ञान) की सेवा या राजनीति क्यों कि इल्म शांति और इत्मिनान चाहता है। जबकि राजनीति आशान्ति का संकेत है।

तात्पर्य यह कि आपने इल्म के मैदान में रंगारंग फूलों के ऐसे अनेक वृक्ष लगाए जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक धरोहर है और इस्लामी जगत के लिय एक जीवित सत्य और नदवा के लोगों के लिये एक गर्व और बहुमुल्य सामग्री (असासा) है जिसके मद्देनजर आज भी नदवे का सिर गर्व से ऊँचा है और कल भी इसी बुनियाद को लेकर शिक्षा और अनुसंधान (तहकीक) के मैदान में नये नये शगूफे खिला सकता है।

अल्लामा ने उर्दू अदब (साहित्य) से लेकर अनुसंधान व समीक्षा, इतिहास और संग्रह, सीरत (मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी) व फलसफा के सम्बन्ध में जो काम किया वह अपनी जगह पर मगर मौलाना की राजनीतिक, कौम और मिल्लत की सेवा को भी भुलाया नहीं जा सकता। आज मौलाना इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन उनकी रचना व संग्रह बड़ी संख्या में मौजूद हैं जिन से हम लाभ उठा सकते हैं और अल्लामा के लिये मगफिरत (मुक्ति) की दुआ कर सकते हैं।

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुगल काल

— इदारा

कालिंजर पर आक्रमण :–

कालिंजर का दुर्ग उत्तर–प्रदेश के बाँदा जिले में स्थित था। वह विन्ध्याचल पर्वत की एक चट्टान पर बना था जो कोई सौ फीट ऊँची थी। यह दुर्ग बड़ा ही सुरक्षित तथा अभेद्य समझा जाता था। तुर्को ने कई बार इस पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया था। बाबर ने भी हुमायूं को इस दुर्ग को जीतने के लिये भेजा था परन्तु समझौता हो गया था। जब हुमायूं सिंहासन पर बैठा तब उसने फिर कालिंजर पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया। कारण यह था कि कालिंजर का शासक राजा प्रताप रुद्र कालपी पर अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न कर रहा था। कालपी का महत्व इन दिनों बहुत अधिक बढ़ गया था क्योंकि गुजरात के शासक बहादुरशाह ने मार्च, 1531 ई0 में मालवा पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और कालपी उसके लिए उत्तरी हिन्दुस्तान में आने के लिए प्रवेश–द्वार बन गया। हुमायूं ने कालिंजर के दुर्ग का घेरा डाल दिया और उस पर गोला बारी आरंभ कर दी। मुश्किल से एक महीना घेरा चला था कि उसे यह सूचना मिली कि इब्राहीम लोदी के भाई महसूद लोदी ने जौनपुर पर अपना अधिकार जमा लिया है और वहाँ से मुगल अफसरों को मार भगाया है। अतएवं हुमायूं ने कालिंजर के राजा के साथ समझौता कर लिया और चुनार की ओर चला गया।

मूहमूद लोदी के साथ संघर्ष :–

महमूद लोदी तथा उसके समर्थकों ने सबसे पहले बिहार को अपने अधिकार में कर लिया और वहीं पर एक बहुत बड़ी सेना इकट्ठा कर ली। इसके बाद इन लोगों ने मुगल–साम्राज्य पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया। इन लोगों ने जौनपुर से मुगलों को मार भगाया और अवध में अपनी प्रभुता स्थापित करनी आरम्भ कर दी। इस समय हुमायूं चुनार में था उसने तुरन्त वहाँ से प्रस्थान कर दिया और अफगानों का सामना करने के लिये वह आगे बढ़ा परन्तु वर्षा श्रृतु आरम्भ हो जाने के कारण उसने लोहा न लिया। इसी समय उसे अपने भाई कामरान के विद्रोह की सूचना मिली; अतएवं वह आगरे चला गया।

जब कामरान ने यह देखा कि हुमायूं अपने शत्रुओं से संघर्ष करने में अत्यन्त व्यस्त है तो उसने इस स्थिति से लाभ उठाने का प्रयत्न किया। उसने अफगानिस्तान का प्रबन्ध अपने छोटे भाई अस्करी को सौंप दिया और स्वयं अपनी सेना के साथ पंजाब में घुस आया और मुल्तान तथा लाहौर पर अपना अधिकार स्थापित कर वहाँ पर अपने अफसर रख दिये। उसने हुमायूं को बड़ी ही विनम्र पत्र लिखे कि वह मुल्तान तथा पंजाब के प्रान्त उसे दे दे। चूंकि हुमायूं के पास अन्य कोई चारा न था और अपने साम्राज्य के पश्चिमी भाग में शान्ति बनाये रखना आवश्यक था। अतएवं उसने कामरान की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

कामरान को संतुष्ट करने के बाद हुमायूं ने अफगानों की ओर ध्यान दिया। उसने लखनऊ से थोड़ी दूर पर दौरान नामक स्थान पर अफगानों के साथ लोहा लिया। यद्यपि अफगानों ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया परन्तु वे परास्त हो गये। महमूद लोदी बिहार के ओर भाग गया और फिर कभी उसने युद्ध करने का साहस न किया। जौनपुर मुगलों के अधिकार में आ गया।

बहादुरशाह के साथ संघर्ष :–

हुमायूं का गुजरात के शासक बहादुरशाह के साथ भी संघर्ष हुआ। इस संघर्ष के कई कारण थे। बहादुरशाह बड़ी ही योग्यता

तथा महत्त्वाकाँक्षी व्यक्ति था। वह अपनी शक्ति को निरन्तर बढ़ाता जा रहा था और मुगलसाम्राज्य के लिये खतरनाक सिद्ध होता जा रहा था। उसकी दृष्टि दिल्ली के सिंहासन पर लगी हुई थी। मार्च 1531 ई0 में उसने मालवा पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और अपनी शक्ति में बड़ी वृद्धि कर ली। उसने मेवाड़ के राज्य पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहा जो उसके तथा मुगल–साम्राज्य के मध्य स्थित था। यदि बहादुरशाह मेवाड़ पर अपना अधिकार सथापित कर लेता तो वह मुगल–साम्राज्य की सीमा पर पहुंच जाता और सीधे मुगल–साम्राज्य पर आक्रमण कर सकता था। इतना ही नहीं, बादुरशाह हुमायूं के शत्रुओं की भी सहायता कर रहा था। उसने शेर खाँ के साथ गठबंधन कर लिया था और हुमायूं के विरुद्ध उसकी सहायता कर रहा था। बंगाल के शासक के साथ भी बहादुरशाह ने अपना सम्पर्क स्थापित कर लिया था और हुमायूं के विरुद्ध षडयंत्र रच रहा था। वास्तव में बहादुरशाह का दरबार हुमायूं के शत्रुओं के लिये शरण–स्थल बन गया था। बहुत से अफगान तथा मुगल अमीर जिनका हुमायूं के साथ झगड़ा था बहादुरशाह के दरबार में चले गये जिनका उसने स्वागत तथा आदर–सम्मान किया। इनमें से एक मुहम्मद जमाँ मिर्जा भी था जिसने हुमायूं के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया और जो बियाना के कारागार से भाग कर बहादुरशाह के यहाँ चला गया था। इन अमीरों ने बहादुरशाह को समझाया कि हुमायूं एक निकम्मा शासक है, उसकी सेना में कोई दम नहीं है और दिल्ली का सिंहासन प्राप्त करना कुछ कठिन काम नहीं है। इन सब बातों का बहादुरशाह के मस्तिष्क पर अवश्य प्रभाव पड़ा होगा। उसे पुर्तगालियों से भी सैनिक सहायता का आश्वासन प्राप्त हो गया था। हुमायूं भी यह समझ रहा था कि बहादुरशाह के साथ युद्ध होना अनिवार्य है। उसने बहादुरशाह को पत्र लिखा कि वह उसके शत्रुओं को और विशेषकर मुहम्मद जमाँ मिर्जा को अपने यहाँ शरण न दे। जब हुमायूं को संतोषजनक उत्तर न मिला तब उसने युद्ध करने का निश्चय कर लिया।

बहादुरशाह के साथ युद्ध करने का निश्चय करने के उपरान्त हुमायूं अपनी सेना के साथ ग्वालियर चला गया और वहीं से उसकी गतिविधि को देखता रहा। थोड़े दिनों बाद हुमायूं और आगे बढ़ा और 1535 ई0 में उज्जैन पहुंच गया। इन दिनों बहादुरशाह चितौड़ का घेरा डाले हुए था। कहा जाता है कि चितौड़ के राणा विक्रमादित्य की माता, रानी कर्णवती ने हुमायूं को अपना भाई मान करके उसके पास राखी भेजी और उससे सहायता माँगी। यह हुमायूं के लिये स्वर्ण अवसर था। यदि वह इस संकट–काल में राजपूतों की सहायता कर दिये होता तो वे सदैव के लिए उसके मित्र तथा सहायक बन गये होते और शेर खाँ तथा बहादुरशाह का सामना करने में उसे राजपूतों से बड़ी सहायता मिली होती। इसके अतिरक्ति चितौड़ पर विजय प्राप्त करने के बाद बहादुरशाह की शक्ति में जो वृद्धि हुई वह न हो सकी होती। परन्तु हुमायूं ने इस सुअवसर से कोई लाभ न उठाया। उसने राजपूतों की कोई सहायता न की। इसका परिणाम यह हुआ कि चितौड़ पर बहादुरशाह का अधिकार स्थापित हो गया और उसकी शक्ति में बड़ी वृद्धि हो गई। उसने चितौड़ को खूब लूटा और हुमायूं से लड़ने के लिये उसे बहुत–सी सामग्री प्राप्त हो गई।

अब हुमायूं की भी आँखें खुली और बहादुरशाह की शक्ति को नष्ट करने के लिये वह आगे बढ़ा। मन्दसौर नामक स्थान पर बहादुरशाह ने चारों ओर से खाइयाँ खुदवा कर अपनी सुरक्षा की व्यवस्था कर रखी थी। उसने अपने तोपखाने को सामने कर अपनी सेना को उसके पीछे छिपा रखा था। हुमायूं को इसका पता लग गया। अतएवं दूर ही से उसके अश्वारोहियों ने बादशाह की सेना पर बाण वर्षा करना आरम्भ कर

दिया। बहादुरशाह का तोपखाना बेकार हो गया। हुमायूं ने उसके रसद मंगाने के मार्ग को भी काट दिया। इससे विवश होकर बादशाह मन्दसौर से भाग कर भाण्डू चला गया। मुगल सेना ने बड़ी तेजी के साथ बहादुरशाह का पीछा किया। भाण्डू में सुरक्षा की समुचित व्यवस्था न देखकर बहादुरशाह केवल पाँच स्वामिभक्त अनुयायियों के साथ चम्पानेर भाग गया। भाण्डू के दुर्ग पर मुगलों ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया और उसे खूब लूटा। चम्पानेर पहुंचने पर बहादुरशाह ने पहला काम यह किया कि उसने अपनी स्त्रियों तथा अपने खजाने को डयू भेज दिया जो पुर्तगालियों के अधिकार में था। उसने दूसरा काम यह किया कि चम्पानेर में आग लगावा दी और उसे भस्म कर दिया जिससे शत्रु उसके कोई लाभ न उठा सके। फिर वह खम्भात भाग गया। हुमायूं ने यहाँ पर भी उसे विश्राम न लेने दिया। अपने एक हजार अश्वारोहियों के साथ उसने उसका पीछा किया। भयभीत होकर बहादुरशाह डयू भाग गया और पुर्तगालियों के यहाँ शरण ली। हुमायूं निर्विरोध खम्भात पहुंच गया। उसे उसने खूब लूटा और जलवा दिया। खम्भात में हुमायूं नवम्बर के महीने तक रहा और पुर्तगालियों के साथ मैत्री–सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया परन्तु यह सफल न हो सका। पुर्तगालियों ने बहादुरशाह के साथ गठबन्धन कर लिया और उसकी सहायता करने का वचन दे दिया।

हुमायूं खम्भात से आगे न बढ़ा। यह उसकी बहुत बड़ी भूल थी। उसे बहादुरशाह का डयू तक का पीछा करना चाहिये था और उसे समाप्त कर तब दम लेना चाहिये था जिससे भविष्य में किसी प्रकार की आपति को आशंका न होती। खम्भात से हुमायूं फिर चम्पानेर चला आया और वहाँ के दुर्ग पर उसने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इस दुर्ग में उसे अपार सम्पत्ति प्राप्त हुई परन्तु उसका उसने सदुपयोग न किया और भोग–विलास में व्यय कर दिया। थोड़े ही दिनों बाद हुमायूं चम्पानेर से अहमदाबाद की ओर बढ़ा और उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

गुजरात को हुमायूं ने मुगल साम्राज्य में मिला लिया और अस्करी मिर्जा को वहाँ का शासक बना दिया जो अहमदाबाद से गुजरात का शासन करने लगा। गुजरात की व्यवस्था करने के उपरान्त हुमायूं डयू की ओर बढ़ा परन्तु इसी समय उसे उत्तरी भारत में विद्रोह हो जाने की सूचना मिली; अतएवं उसने आगरे के लिए प्रस्थान कर दिया। हुमायूं के लौटते ही बहादुरशाह तथा उसके समर्थकों ने मुगलों के अपने राज्य से खदेड़ना आरम्भ कर दिया। इस गम्भीर स्थिति में चम्पानेर के शासक तार्दी वेग ने अस्करी को धोखा दिया। और उसकी सहायता करने से इन्कार कर दिया। हुमायूं भी अस्करी की सहायता न कर सका। अतएवं बहादुरशाह ने गुजरात तथा मालवा पर भी अपना अधिकार कर लिया। परन्तु बहादुरशाह अपनी इस विजय का उपयोग बहुत दिनों तक न कर सका। फरवरी 1536 ई0 में जब वह डयू के पुर्तगाली गवर्नर से मिलने गया था तब समुद्र में डूब कर मर गया।

शेर खाँ के साथ संघर्ष

शेर खाँ हुमायूं का सबसे भंयकर शत्रु सिद्ध हुआ। उसने अफगानों का नेतृत्व ग्रहण कर लिया था और अपनी शक्ति के बढ़ाने में लगा हुआ था। उसने दक्षिण बिहार पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था और चुनार का दुर्ग भी उसके अधिकार में आ गया था। चुनार के दुर्ग का सामारिक दृष्टिकोण बहुत बड़ा महत्व था। वह बड़ा ही सुदृढ़ तथा अभेद्य समझा जाता था। वह आगरे से पूर्व की ओर जाने वाले स्थल तथा नदियों के मार्ग में पड़ता था। इसी से उसे पूर्वी भारत का फाटक कहा गया है। इस महत्व के कारण हुमायूं तथा शेर खाँ दोनों ही उसे अपने अधिकार में रखना चाहते थे।

जारी...

❑❑

मय्यित के हुक़ूक़

फ़िक़्ह व हदीस की किताबों से माख़ूज़

- डा0 हारून रशीद सद्दीक़ी

आख़िरी वक्त की तलक़ीन

जब हालात से लगे कि किसी मुसलमान का वक्त क़रीब है तो मुम्किन हो तो उस को क़िब्ला रुख़ कर दीजिये और उस के पास हल्की आवाज़ से जिसे वह सुन सके कलिमा पढ़िये मगर उस से पढ़ने को न कहिये, उस के पास यासीन शरीफ़ पढ़िये, जब रूह निकल जाए तो दोनों हाथ बराबर में रख दीजिये सीने पर मत रखिये मुंह बन्द कर दीजिये और एक कपड़े से ठोड़ी के नीचे से सर के ऊपर बान्ध दीजिये ताकि मुंह खुला न रहे। बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि कहते हुए आंखें बन्द कर दीजिये दोनों पैरों के अंगूठे मिलाकर बांध दीजिये और ऊपर से चादर डाल दीजिये पास में लोबान या अगर बत्तियां सुलगा दीजिये।

नहलाना (ग़ुस्ल के वक्त लोग घेर कर खड़े न हों)

मय्यित को जिस तख़्ते पर नहलाना हो उसे पाक कर के ताक़ बार लोबान या अगरबत्ती की धूनी दे लीजिये, नहलाने की जगह से पानी निकलने या किसी गड्ढे में पानी जमअ़ करने का इन्तिज़ाम कर लीजिये ताकि उस पानी से नहलाने वालों या दूसरों को तकलीफ़ न हो, तख़्ता सरहाने की तरफ़ जरा ऊंचा रखें, मुर्दे को तख़्ते पर लिटा कर ढोंढ़ी से घुटनो तक पाक कपड़ा डाल कर पहने हुये कपड़े आहिस्ता से उतार लीजिये, फिर बायें हाथ में दस्तानः पहन कर पहले ताक़ ढेलों से फिर पानी से अच्छी तरह इस्तिंजा कराइये फिर दस्ताना पाक कर के या बदल के वुज़ू कराइये, वुज़ू में पहले मुंह धुलाइये, फिर कुहनियों समेत हाथ, फिर सर का मसह, फिर दोनों पैर धोइये, कुल्ली न कराइये न नाक में पानी पहुंचाइये, अलबत्ता अगर ग़ुस्ल की हाजत रही हो तो यह भी कीजिये वरनः पाक रूई से दांत और नाक साफ करके मुंह और नाक रूई से बन्द कर दीजिये ताकि अन्दर पानी न जाय, फिर सर और दाढ़ी बेरी की पत्तियां पड़े नीम गर्म पानी से या साबुन लगाकर नीम गर्म पानी से साफ़ कीजिये, फिर बाईं करवट लिटा कर बेरी की पत्ती पड़ा हल्का गर्म पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये, अब आप कोई अच्छा साबून लगा कर या बिना साबून लगाए आहिस्ता अहिस्ता मल कर मैल निकाल दीजिये, फिर दाहिनी करवट लिटा कर बेरी की पत्ती पड़ा हल्का गर्म पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये यह दो ग़ुस्ल हो गये अब सर की तरफ से लाश को जरा उठा कर आहिस्ता अहिस्ता पेट मलये और अगर कुछ निकले तो चीथड़े या ढ़ेले से पोंछ कर बायें हाथ में दस्ताना पहन कर ठीक से धो दीजिये। कुछ गंदगी निकलने पर वुज़ू और पहले वाले गुस्ल दुहराने की जरुरत नहीं, अब मय्यित को बाईं करवट लिटा कर काफ़ूर पड़ा गुनगुना पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये मुर्दे का ग़ुस्ल पूरा हो गया। अगर सफ़ाइ न हो सकी हो तो दो ग़ुस्ल और दें।

अगर गर्म पानी, बेरी की पत्ती और काफ़ूर वग़ैरह का किसी मजबूरी से इन्तिज़ाम न हो सके तो सादे पानी से इसी तरह ग़ुस्ल दीजिये और अगर कोई मजबूरी हो तो मुर्दे को सिर्फ एक बार ग़ुस्ल दे देने से ग़ुस्ल हो जायेगा। औ़रत का ग़ुस्ल भी इसी तरह होगा।

ग़ुस्ल पूरा हो जाने के बअ़्द कोई पाक कपड़ा नाफ़ से घुटनों तक डाल कर गीला कपड़ा अलग कर लीजिये और पाक कपड़े से बदन पोंछ कर कफ़न पहनाइये।

कफ़न

कफ़न का कपड़ा ज़ियादा मंहगा न हो और सफ़ेद होना बेहतर है। आ़मतौर से कफ़न छालटीन (लट्ठे) से बनाते हैं जिस की चौड़ाई 80 या 90 सेन्टी मीटर होती है ऐसा कपड़ा मर्द के कफ़न के लिये 16

मीटर और औरत के कफ़न के लिये 19 मीटर लेना चाहिये।

(1) लिफ़ाफ़ा : सवा दो मीटर कद छोटा हो तो अन्दाजे से इतना लें कि सर और पैर दोनों ओर आधा हाथ बांधने के लिये निकला रहे। चौड़ाई अगर कम है तो पट्टी जोड़ कर सवा मीटर कर लीजिये।

(2) तहबन्द : दो मीटर, इस की चौड़ाई भी सवा मीटर से कम हो तो पट्टी जोड़ें, लम्बाई सर से पैर तक होना चाहिये छोटा कद हो तो अन्दाजा कर के कम कर लें।

(3) कुरता : ढाई मीटर इस को आधे से मोड़ लें और मोड़ की तरफ़ सिर डालने के लिये थोड़ा हिस्सा बीच में फ़ाड लें। (इस की दुहरी लम्बाई कन्धों से पिन्डलियों तक हो

यह मर्द का कफ़न हुआ औरत के कफ़न में दो कपड़े और हैं।

(4) ओढ़नी : एक मीटर और

(5) सीना बन्द : डेढ़ मीटर ओढ़नी की चौड़ाई एक हाथ से कुछ ज़ियादा हो।

कफ़न से अलग कपड़े

1.ऊपर उढ़ाने वाली चादर सवा दो मीटर चौड़ाई कम हो तो पट्टी जोड़ें।
2.नहलाने वाला कपड़ा एक मीटर।
3.नहलाने के पश्चात कफ़न पर लाने वाला कपड़ा एक मीटर।
5.बदन पोछने वाला कपड़ा आधा मीटर।
6.दो या तीन दस्ताने।
7.जानमाज आधा मीटर।

कफ़न बिछाना

कफ़न को पहले ताक़ बार लोबान या अगरबत्ती वगैरह से धूनी दे लें फिर पाक चार पाई या जिस पर जनाजः ले जाना हो नहलाने की जगह के क़रीब रख कर कफ़न इस तरह बिछायें :–

पहले बीच वाली पट्टी बिछायें, फिर लिफ़ाफः, फिर तहबन्द, फिर कुरता इस तरह बिछायें कि नीचे वाला हिस्सा बिछा रहे और ऊपर वाला हिस्सा समेट कर सर की तरफ़ रख दें औरत के कफ़न मे लिफ़ाफ़े पर तहबन्द से पहले सीनः बन्द इस तरह बिछायें कि बग़ल के नीचे से रानों तक रहे, फिर तहबन्द उस के ऊपर कुरता जैसे बताया गया बिछा दें।

कफ़नाना

मय्यित को कफ़न पर लिटा कर कुरते का ऊपर वाला हिस्सा सर से निकाल कर जिस्म पर उढ़ा दीजिये, और जो कपड़ा, गीला कपड़ा हटाने और परदे के लिये डाला था उसे निकाल लीजिये, अब सर और दाढ़ी में अित्र लगाइये, पेशानी हथेलियों और घुटनों और पैरों पर काफ़ूर मलये, अब जिसको मय्यित की ज़ियारत करना है ज़ियारत कर ले। फिर तहबन्द पहले बाईं तरफ़ से पलटिये, फिर दाईं तरफ़ से इसी तरह चादर पहले बाई तरफ़ से फिर दाहिनी तरफ़ से पलटये।

औरत के कफ़नाने में अित्र और काफ़ूर लगाकर उस के बालों के दो हिस्से कर के आधे दाहिनी तरफ़ और आधे बाईं तरफ सीने पर कुरते के उपर रख दीजिये और दोपट्टा सर से उढ़ा कर आंचल दोनों तरफ़ बालों पर डाल दीजिये अब लोगों को ज़ियारत का मौकअ दीजिये, नामहरम के लिये औरत मय्यित की ज़ियारत हराम है। और अब पहले की तरह यअ्नी पहले बाईं तरफ़ से फिर दाहिनी तरफ़ से तहबन्द फिर सीनः बन्द और आख़िर में लिफ़ाफ़ः पलट दीजिये, अब बीच की पट्टी बांध दीजिये, और सर के बाहर और पैरों के बाहर भी कपड़ा चुन कर पट्टियां बाँध दीजिये।

मर्द के कफ़न में यही तीन कपड़े और औरत के कफ़न में यही पांच कपड़े देने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तअ्लीमात से साबित हैं और फ़िक़्ह की किताबों में लिखे हैं, अगर हम को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात को सब से ऊपर रखना है तो हम अपनी तरफ़ से इससे ज़ियादः कपड़े न दें। यअ्नी साफ़ा या पैजामा वग़ैरह न दें।

जनाज़े की नामज़

किसी साफ़ जगह पर सिरहाना उत्तर को कर के जनाज़ा रखें, इमाम साहिब जनाज़े के सीने के सामने क़िबले की तरफ़ मुंह कर के खड़े हों और नीयत कर के नमाज़ पढ़ायें, लोगों की सूहलत के लिये नमाज़ का तरीक़ा लिखा जाता है।

इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वालों की नीयत

नीयत करता हूँ मैं अल्लाह के वास्ते नमाज़े जनाजः पढ़ने और इस मय्यित के लिये दुआ करने की, पीछे इस इमाम के मुंह मेरा तरफ़ कअ्बः शरीफ के, यह नीयत दिल में सोचकर और ज़बान से अदा कर के अल्लाहु

अकबर कह कर हाथ कानों तक उठा कर बांध लें यही नीयत इमाम की भी हुई वह पीछे इमाम के न कहे, अब सना पढ़ें।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

फिर इमाम के तकबीर कहने पर अल्लहु अकबर कहें और अब दुरुद शरीफ़ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ

फिर इमाम के तकबीर कहने पर अल्लाहु अकबर कहें और अब यह दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا

اَللّٰهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيْمَانِ

फिर इमाम के तकबीर कहने पर अल्लाहु अकबर कहें और उसके सलाम फेरने पर अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुलाहि कह कर दाहने और बायें सलाम फेरें। लेकिन अगर मय्यित नाबालिग़ हो और लड़का हो तो सलाम फेरने से पहले वाली दुआ की जगह यह दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَاجْعَلْهُ لَنَا أَجْرًا وَذُخْرًا وَاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَمُشَفَّعًا

और अगर मय्यित नाबलिग बच्ची की हो तो यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَاجْعَلْهَا لَنَا أَجْرًا وَذُخْرًا وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَمُشَفَّعَةً

किसी मुक़तदी को यह दुआएं याद न हों तो वह चुप चाप खड़ा रहे इमाम की तकबीरों के साथ चारों बार अल्लाहु अकबर कहे और इमाम के सलाम फेरने पर सलाम फेर दे।

दफ़नाना

जनाज़े को क़ब्र में क़िबले की तरफ़ से बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूल्लिलाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) कह कर उतारें मय्यित अगर औरत हो तो चादर तान कर परदः कर लें, और औरत का जनाज़ः उस के महरम उतारें, महरम न हों तो कोई उतारे दूसरे ग़ैर महरमों के मुक़ाबले में शौहर को उतारना चाहिये।

मय्यित को दाहिनी करवट लिटा कर किबलः रू कर दें। ज़रूरत हो तो शाने के बराबर पीठ की जानिब मिट्टी का ढेला रख दें और बन्द खोल दें अब लकड़ी या पटरे वग़ैरह रख कर मिट्टी डालें, अित्र और काफूर वग़ैरह ख़ुशबू लगा चुके हैं अब क़ब्र में क्योड़ा डाल कर कीचड़ न करें कि यह साबित भी नहीं है। बअ़ज जगह मिट्टी डालने से पहले पढ़े हुये ढेले रखे जाते हैं। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह भी नहीं सिखाया है।

मिट्टी डालते वक़्त पहली बार मिन्हा ख़लक़नाकुम दूसरी बार, व फ़ीहानुअ़ीदुकुम और तीसरी बार, व मिनहा नुख़ुरिजुकुम तारतन उख़रा, पढ़ें। क़ब्र ज़ियादाः ऊंची न करें बीच का हिस्सा उभरा रखें। क़ब्र बराबर करके उस पर पानी छिड़क दें, बअ़ज जगह क़ब्र दुरुस्त करने के बअ़द उस पर अज़ान कहते हैं। क़ब्र पर अज़ान कहना हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को नहीं सिखाया लिहाज़ा जिस को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सच्ची महब्बत हो और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात सब की बातों पर ऊंची रखना चाहता हो वह क़ब्र पर अज़ान न कहे किसी सहाबी (र0) ने किसी की क़ब्र पर अज़ान नहीं कही।

सवाब पहुंचाना

दफ़न के बअ़द क़ब्र पर थोड़ी देर तक ठहर कर कुछ पढ़ कर मय्यित को सवाब बख़्शें और मय्यित के लिये मग़फ़िरत की दुआ करें।

फिर घर आकर अल्लाह तआ़ला जब भी तौफ़ीक़ दे किसी रस्म की पाबन्दी के बिगैर कुरआन शरीफ़ पढ़ कर या कलमा पढ़ कर या ग़रीबों को खिला पिला कर या खाना कपड़ा या नक़्द गरीबों को दे कर या कोई भी नेक काम, नफ़्ली अ़िबादत करने के बअ़द हाथ उठा कर अल्लाह तआ़ला से दुआ करें कि ऐ अल्लाह मेरे इस अ़मल को क़बूल फ़रमा और इस का सवाब फ़ुलां की रूह को बख़्श दे फिर दुरूद पढ़कर हाथ मुंह पर फेर लें यही सवाब पहुंचाना है। और यही फातिहः है। वफ़ात पाने वाले को फ़ाइदः पहुंचाने और उससे तअ़ल्लुक़ बाक़ी रखने का शरीअ़त के मुताबिक़ यह बेहतरीन तरीक़ा है बुज़ुर्गों की फातिहः का भी यही तरीक़ा है। तीजा चालीसवा बर्सी में अ़ज़ीज़ व अक़ारिब को दअ़वत खिलाना सहाब–ए–किराम से साबित नहीं। यह बिदअ़ात हैं इनसे बचें मय्यित की मग़फ़िरत की दुआ खूद करें दूसरों से करवाएं लेकिन ईसाले सवाब के लिये दूसरों को मुकल्लफ़ न करें कोई ख़ुद से कर दे तो अच्छी बात है।

❑❑

एतिदाल (बराबरी) और मियानः रवी

अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी

एम0 हसन अंसारी

यह इस्लामी अख़लाक़ व आचरण का वह चैपटर है जिस में वह एकलौता है। इस्लाम की खास खूबी यह है कि इसका रास्ता अक्सर मसअलों में इफ्रात और तफरीत के बीच से निकला है, कुर्आन ने मुसलमानों को 'बीच की उम्मत' का खिताब जिन कारणों से दिया है उनमें एक यह भी है कि इनका मजहब इफरात व कमी के दरमियान है, इस लिये उस ने अक्सर मामलों में एतिदाल और मियानः रवी की तालीम दी है। इन्तेहा यह है कि इबादात में भी इस उसूल को वह नहीं भूला है।

दुआ और नमाज में हमारी आवाज कितनी हो, इरशाद है –

तर्जमः "और तू न पुकार अपनी दुआ (या नमाज) में और न चुपके पढ़ और ढूंढ़ ले इस के बीच में राह", (सूरः बनी इस्राईल –12)

यानी न चिल्ला कर दुआ की जाये या नमाज पढ़ी जाये कि नुमाइश हो जाये, या मुखालिफ इस को सुन कर बुरा भला कहे और न बिल्कुल चुपके चुपके कि साथ वाले भी न सुन सकें, बल्कि दोनों के बीच की राह इख्तियार की जाये।

हमारी चाल ढाल कैसी हो इस की निस्बत हज़रत लुकमान की सीख में हैं।

तर्जमः "और चाल बीच की चल।" (सूरः लुकमान–1)

यानी इतनी तेज न हो कि चाल में मतानत और वकार (सौभ्यता तथा गम्भीरता) न बाकी रहे, और न इतनी धीरे हो कि रियाकार जाहिदों (पाखन्डी) की नुमाइशी चाल बन जाये।

सखावत और फैय्याजी (उदार) से बेहतर कोई चीज़ नहीं सारे मजहबों ने इस की ताकीद पर ताकीद की है, विशेष बल दिया है और जो जितना ज्यादा लुटा सके उतना अधिक प्रशंसनीय है, लेकिन इस्लाम ने इस राह में भी बे एतिदाली (ना बराबरी) से परहेज किया है। और इसको अच्छा नहीं समझा है कि दूसरों को देकर तुम खुद इतने मुहताज बन जाओ कि भीख मांगने की नौबत आजाये और मुहताजों में एक मुहताज और बढ़ जाये। फरमाया :

तर्जमः "और न तो हाथ अपनी गर्दन में बान्ध ले, ओर न इस को बिल्कुल खोल दे कि तू बैठ जाये मलामत का निशाना बन कर थका हारा।" (सूर : बनी इस्राईल 3)

मुसलमानों की अखलाकी खुसूसियतों (आचरण की विशेषताओं) के सिलसिले में कहा :

तर्जमः और जो खर्च करें तो फुजूलखर्ची न करें और न बहुत तंगी करें, और रहो इस के दरमियान एतिदाल से, अर्थात न अपव्यय हो न कंजूसी हो, दरमियान की चाल हो। (सूरः फुरकान 6)

सही बुखारी में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमाया :

"उतना ही अमल का प्रयास करो जितना तुम कर सको।" "अमल" का शब्द यद्यपि यहाँ आम है मगर टीकाकारों के नजदीक इस से मुराद नमाज, रोजा आदि इबादतें हैं। मकसद यह है कि फरायज के बाद नवाफिल का उतना ही बोझ उठाओ जिस को तुम आसानी से उठा सको, और आखिर दम तक निबाह सको। दूसरी और हदीसों से मालूम होता है कि इस एतिदाल और मियाना रवी की तालीम सिर्फ इबादात तक सीमित नहीं बल्कि वह जीवन के हर क्षेत्र तक फैली है। हज़रत हुजैफः (रज़ि0) सहाबी बयान करते है। कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमाया –

"दौलतमन्दी में बीच की राह कितनी अच्छी है, मुहताजी में बीच की राह कितनी अच्छी है, इबादत में बीच की राह कितनी अच्छी है।"

शेष पृष्ठ 37

अहले खैर हजरात से अपील

इस वक्त पूरे आलम में दीन और अहलेदीन के खिलाफ़ जो तहरीकें चल रही हैं और दीन व ईमान को बिगाड़ने, अख्लाकी कद्रों को पामाल कर देने के लिये नश्र व इशाअत के जदीद तरीन वसाइल व आलात के जरीए घर–घर जो फितना फैल रहा है उससे कौम और उसकी जदीद नस्ल को खास तौर से बचाने और इन फितनो का मुकाबला करने के वास्ते मौजूँ और मुनासिब अफ्राद तय्यार करने के लिये दारुल उलूम नदवतुल उलमा जैसे इदारे की कितनी जरुरत है यह आप से पोशीदा नहीं है लिहाजा इसके तमाम मंसूबों की तकमील के लिये आप का हर तरह का तआवुन न सिर्फ बाइसे खैर व बरकत होगा बल्कि इससे पूरी मिल्लते इस्लामिया को फाइदा पहुंचेगा और उसकी हिफाजत व बका का सामान मुहय्या होगा।

हमारे नजदीक मालियात, बजट और अजीमूश्शान इमारतों से जियादा वह मकसद जियादा अज़ीज़ है जिसके लिये यह दारुल उलूम काइम किया गया, यानी जदीद जमाने में इस्लाम की मुअस्सिर और दीन व दुन्या की जामअीयत और इल्म व रूहानियत के इजतिमाअ़ की कोशिश फितन–ए–लादीनियत और जेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमे इस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज का एलान व इजहार दीने हक से वफादारी और शरीअ़त पर एतिमाद, नदवतुल उलमा इन मकासिद की तकमील पर गामजन है।

खुदा के फज्ल से हम ने साले रवां में तामीरात का खासा काम किया। फिर भी तामीरात से मफर नहीं रिवाके सुलैमानी में तलबा के लिये 28 नये कमरे तय्यार किये गये और एक जदीद दारुल इकामा "रिवाके हबीब" की तामीर की गई। लेकिन इन की रिहाइश का मसलआ अब भी खातिर ख्वाह हल न हो सका। तलबा की कसरत की वजह से मजीद दरजात की तामीर का काम अल्लाह तआला की मदद के भरोसे पर शुरूअ किया जो मुकम्मल हो ग़या है, जदीद दारुश्शिफा की तामीर भी मुकम्मल हो चुकी है। जिस में जदीद तिब्बी मशीनों और आलात की फराहमी जरूरी है।

अतः हिन्दुस्तान के मुसलमानों से ख्वाह वह इस तवील व अरीज मुल्क के किसी भी इलाके के हों हमारी मुकर्रर दरख्वास्त है कि वह इस काम की अहम्मीयत को समझें और इस को अपना ही काम जानें हमें यकीन और अल्लाह की जाते आली पर पूरा भरोसा है कि इंशाअल्लाह तआला अगर अहबाब व मुखलिसीन ने पूरी दिलचस्पी ली तो हमारा यह पैगाम न सिर्फ मुल्क के हर गोशे बल्कि आलमे इस्लाम के कोने–कोने में पहुंचेगा। (वमा जालिक अलल्लाहि बिअ़ज़ीज़।)

मौ0 वाजेह रशीद नदवी
(मोतमद तालीम नदवतुल उलमा)
वसी अहमद सिद्दीकी
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)
मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
(नाजिरे आम, नदवतुल उलमा)

चेक या ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें :–

NADWATUL ULAMA

फिर इस पते पर भेजें :–

NAZIM NADWATUL
ULAMA, TAGORE MARG
LUCKNOW -226007 (U.P.)

❑❑

धनिकों तक सिमटती शिक्षा

मुशर्रफ़ अली

राजधानी में फीस वृद्धि के ख़िलाफ़ अभिभावकों के हो रहे प्रदर्शन से कैंब्रिज फाउंडैशन स्कूल प्रशासन को यह समझ में नहीं आ रहा है कि स्कूल गेट के बाहर खड़े अभिभावकों को कैसे समझाया जाए। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों ने स्कूल के गेट पर रोज़ डटे रहने का फैसला किया था। अभिभावकों का कहना है कि जब तक हमारी मांगे स्कूल प्रशासन नहीं मानेगा तब तक स्कूल में पढ़ने वाले किसी भी बच्चे के अभिभावक को बढ़ी हुई फीस नहीं देने देंगे।

प्राइवेट स्कूलों में फीस बढ़ोतरी के खिलाफ पैरेंट्स का आन्दोलन लगातार जारी है। पिछले सप्ताह कैलाश कॉलोनी के समरफील्ड सकूल के पैरेंट्स ने जंतर–मंतर पर प्रदर्शन कर अपना विसोध जताया वहीं पीतमपुरा के सचदेवा पब्लिक स्कूल के बच्चों ने पैरेंट्स के साथ फीस बढ़ोतरी के खिलाफ नारेबाजी की।

नया सत्र आरंभ होते ही इस प्रकार के समाचार सभी अखबारों में आने लगे जो इस सच्चाई की ओर संकेत करते हैं कि शिक्षा का अधिकार जो लोअर मिडिल क्लास से पहले ही छीना जा चुका है अब अपर मिडिल क्लास से भी छीना जा रहा है। जिन स्कूलों के नाम ऊपर गिनाये गये हैं वे सभी हाई प्रोफाइल सकूल हैं, जिनमें बच्चों को पढ़ाने का वार्षिक खर्च एक लाख रुपये से कम पहले भी नहीं था और अब पुंजीपतियों का प्रयास यह है कि शिक्षा को केवल पूंजीपति वर्ग के लिए ही सीमित कर दिया जाए।

दुर्भाग्य से हमारी सरकार पूंजीपतियों के ही साथ है। प्राइवेट स्कूलों को मनमानी करने से रोकने का कोई उपाय नहीं किया जा रहा है। आम जनता के सांत्वना के लिए इच्छाशक्ति के बिना सरकारी स्तर से कभी कोई प्रयास किया भी गया तो स्कूल प्रशासन ने कभी उसकी परवाह नहीं की।

दूसरी ओर सुविधा के नाम पर मोटी फीस ऐंठने वाले उन स्कूलों को हाल यह है कि पिछले दिनों मॉडर्न स्कूल वसंत बिहार, नयी दिल्ली की छात्रा आकृति भाटिया की मौत स्कूल प्रशासन की लापरवाही के कारण हो गयी और स्कूल की प्रिंसिपल उसकी जिम्मेदारी मानने को तैयार नहीं है। घिनौने एम0एम0एस0 और डिप्रेशन के कारण आत्महत्या की घटनाएं तो इन स्कूलों में सामान्य हैं।

सरकारी स्कूलों का जो हाल है वह भी किसी से छिपा नहीं है। यहां शिक्षक बच्चों को पढ़ाते–लिखाते तो खैर क्या हैं अलबत्ता बच्चों पर अपना गुस्सा जरूर उतारते हैं। टीचर की मार से बच्चों के विक्लांग होने की घटनाएं तो होती ही रहती हैं, पिछले दिनों शन्नों नाम की एक 11 वर्षीय छात्रा को उसके स्कूल की टीचर मंजू ने इतनी बेरहमी से मारा कि वह मर गयी।

शिक्षा के नाम पर हो रहे इस अत्याचार और इसके सीमित होने को किसी राजनीतिक दल ने भी अपना मुद्दा नहीं बनाया। सरकारें बदलती जा रही हैं और शिक्षा की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। जरूरत है सामूहिक रूप से इसके लिए उठ खड़े होने की और सरकार पर दबाव डाल कर इस क्षेत्र में सकारात्मक काम करवाने की। (क्रान्ति जून 2009 से ग्रहीत)

❑❑

वर्णमाला के अक्षर

चीनी	40–50,000
जापान	18,000
ख़मेर (कंबोडिया)	74
संस्कृति	48
फारसी	32
स्पेनी	29
तुर्की	29
अरबी	28
जर्मन	28
हिब्रू	27
अंग्रेजी	27
फ्रंसीसी	26
यूनानी	26
रोमन	24
लैटिन पूर्व	21
इटालियन	21

बिल्लियों की किस्में

जंगली बिल्ली 'इरेबियन लिंक्स'

स्पेन और पुर्तगाल में जंगली बिल्ली की एक विशेष प्रजाति पायी जाती है, जिसे 'इरेबियन लिंक्स' के नाम से जाना जाता है। हालांकि कुछ समय पूर्व तक यह बिल्ली कई देशों में पायी जाती थी किन्तु इसके अस्तित्व पर अब संकट के बादल मंडरा रहे हैं और अब यह सिर्फ़ स्पेन तथा पुर्तगाल में ही बहुत सीमित संख्या में देखने को मिलती है। करीब आठ साल पहले इनकी संख्या सिर्फ 600 के करीब होने का अनुमान लगाया गया था, जो अब और भी घटने की संभावना जतायी जा रही है।

बताया जाता है कि कुछ समय पहले तक इरेबियन लिंक्स नामक ये जंगली बिल्लियो पूरे स्पेन में देखने को मिलती थी किन्तु कृषि तथा औद्योगिक विकास के चलते इन बिल्लियों ने अपने अधिकांश प्राकृतिक आवासों को खो दिया, जो इनकी संख्या घटने का एक अहम कारण बना है। इसके अलावा इरेबियन लिंक्स (लिंक्स पर्डीनस) की संख्या लगातार घटते जाने का एक और प्रमुख कारण यह भी है कि इनका मुख्य भोजन स्रोत खरगोश रहे हैं, जबकि खरगोशों की संख्या घटाने के लिए जो प्रयोग किये गये थे, उनसे 'माइक्सोमेटोसिस' नामक बीमारी फैली थी, जिसका सीधा असर इरेबियन लिंक्स के अस्तित्व और इनकी तादाद पर भी पड़ा।

तस्करी करने वाली बिल्ली

बिल्ली एक मांसाहारी प्राणी तो है, इसे एक ऐसा चालाक प्राणी भी समझा जाता रहा है, जो हमेशा इसी ताक में रहती है कि कब गृहस्वामी की नजर चुके और ये दूध–मलाई चट कर जाए, लेकिन स्पेन की 'ब्रेना' नामक बिल्ली दूध–मलाई और विभिन्न प्रकार की मिठाइयां खाने की तो शौकिन है ही, साथ ही यह बड़ी तादाद में नशीले पदार्थों की तस्करी भी करती है।

हालांकि यह अपनी मर्जी से नशीले पदार्थों की तस्करी नहीं करती बल्कि तस्कर तस्करी के लिए इन बिल्लियों का इस्तेमाल करते है। प्रायः खाड़ी के देशों में तस्करी के लिए 'ब्रेना' बिल्लियों का इस्तेमाल किया जाता है। तस्कर इस बिल्ली के पेट को चीरकर नशीले पदार्थों की प्लास्टिक की छोटी–छोटी थैलियां रखकर ऑपरेशन के जरिये पेट की दोबारा सिलाई कर देते हैं और बिल्ली के जरिये माल गंतव्य स्थान पर पहुंचने के बाद बिल्ली के पेट से नशीले पदार्थ निकालकर फिर से इसका पेट सिल दिया जाता है।

कंगारू की सवारी करने वाली बिल्ली

बिल्ली को प्रायः एक मांसाहारी जानवर की श्रेणी में ही रखा जाता है किन्तु ऑस्ट्रेलिया में पायी जाने वाली 'मीरिया' नामक बिल्ली इस मामले में अपवाद है क्योंकि यह बिल्ली पूर्ण रूप से शाकाहारी है, जो बड़े शौक से जंगली मीठे फलों का ही भोजन करती है। बहुत से लोग इस बिल्ली को अपने घरों में पालतू बनाकर भी रखते हैं। वैसे इस बिल्ली की सबसे बड़ी ख़ासियत यही है कि यह मौका मिलने पर कंगारू की पीठ पर सवारी जरूरी करती है।

अब पक्षियों को भी आने लगा गुस्सा

प्रकृति के साथ मनुष्य की छेड़छाड़ के घातक और भ्यावह परिणामों की चपेट में अब पंक्षी भी आ गये हैं। शहरीकरण, औद्योगीकरण और कालोनाइजेशन के चलते कम होते वृक्षों, बढ़ते प्रदूषण और आक्सीजन के लगातार कम होने का दुष्परिणाम यह हुआ कि पक्षी भी तनावग्रस्त हो गये हैं। उनमें प्रोटीन नहीं बन रहा है और वे बेचैन होकर इधर–उधर उड़ते हैं। थक्कर बैठ जाते हैं। उनका फड़फड़ाने समेत उनके अनेक व्यवहारों में परिवर्तन आया है।

इस संबंध में कानपूर के दयान्नद कॉलेज के छात्र–छात्राओं द्वारा 100 पक्षियों पर किये गये शोध से जो निष्कर्ष सामने आये हैं, उसके अनुसार प्रदूषण के कारण तथा खाना और ऑक्सीजन की कमी की वजह से अनेक पक्षी के विलुप्त होने का खतरा बढ़ गया है। बागों में उनका संगीतमय स्वरों में चहचहाना कम हो गया है और उनमें तनाव तथा गुस्सा बढ़ा है।

हींग़

बाजार में हींग तीन शक्लों में मिलती है। (1) दाने दार। (2) जमे हुए बेडोल टुकड़े। (3) गीली हालत में, इन में सब से अच्छी दाने दार होती है। जिन का रंग हरछा या हल्का पीला होता है। और बू (गंध) निहायत तेज और नागवार (अप्रिय) होती है उसके पश्चात दूसरी शकलें हैं जिन में पौधो के अजज़ा (अंश) मिले होते हैं।

यह दवा बहुत पुरानी है, अरब तबीबों (चिकित्सकों) ने भी अपनी किताबों में इसका जिक्र किया है और इलाज में बकसरत इस्तिअमाल किया है, हकीम राजी (850 ई0) ने इस को फालिज में इस्तिअमाल करने की सिफारिश की है। जमान–ए–हाजिर (वर्तमान युग) की साइन्टिफिक रिसर्च ने भी हींग को जबरदस्त मुहर्रिके अअ़साब (स्नायु प्रेरक)।

मुहर्रिक अअ़साब (स्नायु प्रेरक) हाज़िम (पाचक) कासिरेरियाह (वायु काटक) दाफिअ़ तअफ़्फ़न (गन्ध नाशक) होने के सबब हींग को फालिज लकवा, कपकपी, मिर्गी भूख की कमी, हज्म में कमी, पेट के दर्द, पेट फूलने, दिल के दर्द में इस्तिमाल करते हैं।

(1) 500 मिली ग्राम अर्थात आधा ग्राम पानी में मिला कर पिये उक्त सभी रोगो में लाभ होगा। (2) दूध पीते बच्चों को पेट फूलने की सूरत में हींग को थोड़े पानी में घोट लें फिर उस में रुई भिगो कर बच्चे की नाफ (ढोढ़ी) पर रखें लाभ होगा।

दिल के दर्द में 500 मिली (आधा ग्राम) हींग मुन्नक़ा में रख कर खिलाते हैं।

हींग से बनी हकीमी दवाएं :–

हब्बे हिलतीत, माजून जोगराज गूगुल, नमक सुलैमानी, माजूने लकवा।

❑❑

एक ख़त का जवाब

अ़रबी के वह हुरूफ़ जो हिन्दी में नहीं हैं लखनऊ के पं0 नन्द कुमार अवस्थी ने नुक़्तों की मदद से सारे हुरूफ़ बना कर पूरा क़ुर्आन हिन्दी लिपी में छापा जिस के बहुत से एडीशन निकल चुके हैं उसका पता यह है :–

BHUVAN VANI TRUST

Mausam Bagh, Sitapur

Road Lucknwow-226020

उर्दू में हम क़रीबुल आवाज़ हुरूफ़ में फ़र्क़ नहीं करते जैसे :–

सलाम, सुबूत, सब्र, तूर, तार, ज़बान, ज़ौक़, जुल्म, अ़लम और हरम हम नुक्ता देकर लिखते हैं।

❑❑

एतिदाल और मियानः रवी

मकसद यह है कि न इतना दौलतमन्द हो कि इन्सान समय का कारून बन कर हक से गाफिल हो जाये। लोग दौलतमन्द हो कर इतना भोग विलास का जीवन व्यतीत करने लगते हैं कि एतिदाल से खारिज हो जाते हैं और कुछ लोग मुहताज होकर इस कद्र नाकिस और जलील हो जाते हैं कि सब्र और आत्मसम्मान और सज्जनता सब कुछ खो देते हैं, और यह भी बे एतिदाली है। इन दोनों दशाओं में इस्लाम की संतुलित शिक्षा यह है कि दौलत मन्दी की हालत में न हद से ज्यादा उठना चाहिए न मुहताजी की हालत में अपनी हैसियत से गिर जाना चाहिये।

इबादत से बढ़कर इस्लाम में कोई नेकी का काम नहीं, इस्लाम इस में भी एतिदाल की तालीम देता है। न इतनी ज्यादा हो कि आदमी दूसरे धन्धों के लायक न रहे और न इतनी कम हो कि हक से ग़ाफिल हो जाये। हज़रत उस्मान (रज़ि0) बिन मजऊन ने जब रातें नमाजों और दिन रोजों में बसर करना शुरू किया तो अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने उनको मना किया और एतिदाल की ताकीद की और फरमाया तुम्हारे जिम्मे और भी हक़ हैं।

❑❑

मानवता के हितार्थ
सत्य और न्याय का सुकार्य

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

स्वामी जी ने पहले इस्लाम और मुसलमानो के खिलाफ एक किताब हिन्दी में लिखी उस का इंग्लिश एडीशन भी आया लेकिन जब उनको सच्चाई मालूम हुई तो उन्होंने "इस्लाम आतंक या आदर्श?" नामक किताब लिखी इस लेख में किताब लिखने का कारण बताया है।

इस्लाम को नजदीक से न जानने वाले भ्रमित लोगों को लगता है कि मुसलमान, गैर–मुस्लिमों से धृणा करने वाले अत्यंत कठोर लोग होते हैं। लेकिन बाद में जैसा कि मैंने देखा, जाना और उनके बारे में सुना उससे मुझे इस सच्चाई का पता चला कि 'मौलाना' कहे जाने वाले मुसलमान व्यवहार में सदाचारी होते हैं, अन्य धर्मों के धर्माचार्यो के लिए अपने मन में सम्मान रखते हैं, साथ ही वे मानवता के प्रति दयालु और संवेदनशील होते हैं। उनमें संतों के सभी गुण मैंने देखे। इस्लाम के ये पंडित आदर के योग्य हैं, जो इस्लाम के सिद्धांतों व नियमों का कठोरता से पालन करते हैं, गुणों का सम्मान करते हैं। वे अति सभ्य और मृदुभाषी होते हैं।

ऐसे मुस्लिम धर्माचार्यों के लिए भ्रमवश मैंने भी गलत धारणा बना रखी थी। अतः अपने लिखे व बोले शब्दों के लिए यह बोलकर के प्रायश्चित करूं कि 'इस्लाम के बारे में मैं कैसे भ्रमित हुआ, फिर मेरा यह भ्रम कैसे दूर हुआ और सच्चाई क्या है?

इसके साथ ही मुस्लिम समाज के साथ हुए भेद भाव के लिए भी मैं आवाज उठाना चाहता था। अपनी संतुष्टि व देश तथा समाज के हित के लिए मैं निरंतर सोचता रहता। इस सब से एक दिन मन बहुत दुखी हो गया, रात एक बजे तक नींद नहीं आयी यह सोचकर कि ऐ परमेश्वर। अब मैं क्या करूं? मैं एक अच्छा कार्य करना चाह रहा हूँ पर मैं अब यह कार्य कैसे करूं? यह सोचते–सोचते नींद आ गयी। सपने में मुझेयह किताब लिखने की प्रेरणा मिली। इसके बाद मैंने प्राथमिकता के आधार पर इस किताब को लिखने का निश्चय किया। लेकिन मैंने जो किताब पहले लिखी थी, उससे यह उलटा विषय था जिस पर मैंने न कभी सोचा था और न ही इस विषय में मुझे ज्यादा जानकारी ही थी, फिर भी किसी अदृश्य ताकत के प्रभाव से मैंने यह किताब लिखी उससे मुझे पूर्ण विश्वास है कि अल्लाह (यानी परमेश्वर) की छिपी मदद से ही मैं इसे लिख सका।

जब मैंने किताब लिखनी शुरू की शुरुआत में ही 24 आयतों वाले जिस पर्चे के बारे में लिखा, वह पर्चा अब मेरे पास नहीं था, जिससे मुझे यह तो पता था कि ऐसा पर्चा बाँटा गया है लेकिन 24 आयतों में कुछ आयतों को छोड़कर शेष आयतें याद नहीं थीं। मुझे उस समय पर्चे की कमी बहुत ख्ल रही थी। मैं सोच रहा था कि यह पर्चा कहाँ से लाऊं। लेकिन आश्चर्यजनक ढंग से उसी दिन शाम को दिल्ली से हिन्दू राइटर्स फोरम के संस्थाापक का भेजा हुआ 24 आयतों वाला पर्चा मुझे मिला। उसके दूसरे दिन ही दिल्ली से निकलने वाला हिन्दू महासभा का पाक्षिक अखबार 'हिन्दू सभावार्ता' भी मुझे मिला, जिसमेंइस विषय में और विस्तार से छपा था। इस तरह दुबारा पर्चा मिलने के कारण ही मैं किताब का तीसरा भाग लिख सका।

मानवता के हित में सत्य और न्याय के इस कार्य की सफलता के लिए मैं परमेश्वर (यानी अल्लाह) ही से मदद मांगता हूँ कि वह कृपालु और दयालु हमारी मदद करे, मुझे रास्ता दिखाये।

❑❑

किस्त 15

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चीख़	चीत्कार	ह़ाकिम	शासक	हुब्बे वतन	स्वदेशे प्रेम
ह़ाजत	आवश्यकता	ह़ाकिम	अधिकारी	ह़बीब	प्रयतम
ह़ाजत बरारी	आवश्यकता पूर्ति	ह़ाल	स्थिति	ह़तमी	अनिवार्य
ह़ादिस़	नवोत्पन्न	ह़ांलांकि	यद्यापि	ह़त्ता	यथा
ह़ादिस़	घटनाशील	ह़ालत	दशा	ह़त्तल् इम्कान	यथा संभव
ह़ादिसा	घटना	ह़ामिल	वाहक	ह़त्तल् मक्दूर	यथा सामर्थ्य
ह़ाजिक़	दक्ष	ह़ामिल	भार वाहक	ह़त्तल वस्अ़	यथा शक्ति
ह़ार्र	ऊष्म	ह़ामिला	गर्भवती	ह़िजाब	आवरण
ह़ारिज	बाधक	ह़ामी	समर्थक	ह़जामत	क्षोर
ह़ासिद	इर्ष्यालू	ह़ावी	प्रभुत्वशाली	ह़ज्जाम	नापति
ह़ास्सः	अनुभव शाक्ति	ह़ाइज़ा	रजस्वला	हुज्जत	तर्क
ह़ाशियः	उपान्त	ह़ाइल	बाधक	हुज्रा	कोष्ठ
ह़ासिल	प्राप्त	हुब्ब	मोह	ह़जम	स्थलता
ह़ासिले कलाम	तात्पर्य	ह़ब्ब	गोली	ह़द	सीमा
ह़ाज़िर	उपस्थित	ह़बाब	बुदबुद	ह़द	अंत
ह़जिर	वर्तमान	ह़िब्र	ज्ञानी	ह़दबन्दी	सीमाकरण
ह़ाज़ीरी	उपस्थिति	ह़ब्स	कारावास	ह़िद्दत	ताप
ह़ाफ़िज़	रक्षक	ह़ब्स	अवरोध	ह़द्दे फासिल	सीमा रेखा
ह़ाफ़िज़ा	स्मरण शक्ति	ह़ब्से दम	प्राणायाम	हुदूदे अरबअ़ः	चुतः सीमा
ह़ाफ़िजा	कंठस्थ करना	ह़ब्से दवाम	आजन्म कारावास	ह़दीस़	कथन

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

ओबामा ने मुस्लिम जगत से रिश्ता जोड़ा, मिस्र में 'अस्सलामु अलैकुम' से शुरू किया भाषण

काहिरा चेंज' का नारा देकर सत्ता में आए अमेरिका राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा ने दुनिया भर के डेढ़ अरब मुसलमानों को अमेरिकी नजरिए में बदलाव का एहसास करवाया। मिस्र में यूनीवर्सिटी ऑफ काहिरा में ओबामा ने भाषण की शुरुआत पंरपरागत इस्लामी अभिवादन अस्सलामु अलैकुम से की। अमेरिकी राष्ट्रपति का इतना कहना था कि खचाखच भरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। हालांकि अमेरिकी राष्ट्रपति के मन में शंकाएं भी थीं। उन्होंने कहा कि महज एक भाषण से सालों के अविश्वास को मिटाया नहीं जा सकता।

ओबामा ने कहा, अमेरिका और इस्लाम अलग नहीं हैं और इन्हें प्रतियोगिता में रहने की भी जरूरत नहीं है। इस्लाम हमेशा से अमेरिकी गाथा का हिस्सा रहा है। हम उस समय मिले हैं जब अमेरिका और दुनिया भर के मुसलमानों के बीच तनाव है। उपनिवेशवाद ने इस तनाव को और बढ़ाया है, जिसने मुसलमानों को अधिकार और अवसर देने से इन्कार किया है। एक शीत युद्ध था जिसमें मुस्लिम अधिसंख्यक राष्ट्रों की आकाँक्षाओं को नजरअंदाज कर उन्हें प्यादे के तौर पर देखा गया। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, मैं अमेरिका और दुनिया के मुसलमानों के बीच एक नई शुरुआत का आहवान करने यहाँ आया हूँ, जो परस्पर हितों और सम्मान पर आधारित हो।

राष्ट्रपति बनने के बाद पहली बार मिस्र की यात्रा पर आए ओबामा ने कहा कि अमेरिका और मुस्लिम जगत को हिंसक उग्रवाद व इसके सभी रूपों से एकजुट हो निपटना होगा। ओबामा ने कुर्आन की एक आयत का जिक्र किया जिसमें कहा गया है कि जो भी किसी निर्दोष को मारता है, वह इन्सानियत का कत्ल करता है। परमाणु हथियारों के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि किसी भी देश को यह नहीं तय करना चाहिए कि कौन सा देश परमाणु हथियार रख सकता है और कौन नहीं।

इज़राइल से उठे विरोध के स्वर

यरुशलम! अमेरिका राष्ट्रपति बराक ओबामा की पश्चिम एशिया यात्रा के विरोध में इजराइली दक्षिणपंथी समूहों ने अमेरिकी वाणिज्यिक दुतावास के समीप प्रदर्शन किया। इन समूहों ने समूचे इजराइल में अमेरिका राष्ट्रपति के ऐसे पोस्टर लगा रहे है जिसमें उन्हे काफिया लगाए दिखाया गया है। साथ ही उन्हें यहूदियों से घृणा करने वाला बताया गया है। यरुशलम स्थित अमेरिकी वाणिज्यिक दुतावास के सामने लग भग 130 प्रदर्शनकारी जुटे।

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

ओबामा ने नफरत फैलाई : लादेन

निकोसिया! अलकायदा के नेता अयमान अल जवाहिरी ने पश्चिम एशिया की यात्रा के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा को फटकार लगाई और मिस्र से इसे टालने के लिए कहा। जबकि आतंकवादी अलकायदा प्रमुख ओसामा बिन लादेन ने कहा है कि ओबामा ने मुस्लिम समुदाय में अमेरिका के प्रति घृणा और प्रतिशोध के बीज बोए हैं और अमेरिकियों को इसका खामियाजा भुगतना होगा। जवाहिरी मूलतः मिस्र का है और उसने ओबामा की काहिरा यात्रा के संदर्भ में कहा कि उन्हें आमंत्रित किया जाना एक तरह से मिस्र की प्रताड़ना करने वालों को बुलाना है।

राष्ट्रपति, पीएम आवास व संसद ने जलाई 14 करोड़ की बिजली

नई दिल्ली! बीते साल राष्ट्रपति भवन, प्रधानमंत्री के अधिकारिक आवास और संसद का बिजली का कुल खर्च करीब 14 करोड़ रुपया रहा। सूचना का अधिकार कानून के तहत मिली जानकारी में खुलासा हुआ है कि 2008 में संसद से 6.25 करोड़ रुपए बिजली के बिल का भुगतान किया गया। राष्ट्रपति भवन का बिल 6.70 करोड़ रुपया रहा। जबकि प्रधानमंत्री आवास का बिजली का बिल 50.35 लाख रुपए रहा। दिलचस्प रूप से राष्ट्रपति भवन और प्रधानमंत्री कार्यालय का बिजली का बिल बीते तीन वर्षों में सबसे अधिक रहा।

❑❑